खण्ड *I*

सामान्य

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
वार्षिक रिपोर्ट 2007-2008

सामान्य

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (आई.सी.एच.आर.) की स्थापना भारत सरकार द्वारा 27 मार्च 1972 के दिन हमारे इतिहास की विभिन्न पहलुओं में वस्तुपरक और वैज्ञानिक शोध (लेखन) को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एक स्वायत्त संगठन के रूप में की गई थी।

परिषद का पहला उद्देश्य इतिहास शोध को उचित दिशा प्रदान करना और वस्तुपरक एवं वैज्ञानिक इतिहास लेखन को बढ़ावा देना है। राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने तथा अपनी सांस्कृतिक धरोहर के सम्मान के हेतु ऐतिहासिक शोध के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए, अन्ध विश्वास, कठमुल्लावाद व पुनरुत्थानवाद की अन्धी स्वीकृति को अस्वीकार करने की दिशा में विशेष ध्यान दिया गया। संस्था ज्ञापन-पत्र में यथानिर्धारित परिषद के उद्देश्य हैं : इतिहासकारों को इकट्ठा करना; और इनके बीच विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच की व्यवस्था करना; इतिहास अनुसंधान कार्यक्रम और परियोजनाएं प्रायोजित करना तथा ऐतिहासिक अनुसंधान कार्य में लगे संस्थानों और संगठनों की सहायता करना। परिषद, ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए विभिन्न प्रकार की फैलोशिप भी प्रदान करती है और उनका प्रशासन करती है। परिषद, देश के विभिन्न भागों में अपने ही सेमिनार आयोजित करने के अलावा, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर संगोष्ठियां, कार्यशालाएं और सम्मेलन आयोजित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है और साथ ही पुस्तकालय सहित दस्तावेज केंद्रों—दिल्ली, बैंगलूर और गुवाहाटी का रखरखाव भी करती है। जिसका बराबर विस्तार हो रहा है। इतिहास के विषय में इसका एक व्यापक दृष्टिकोण है, ताकि इसके अन्तर्गत विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अर्थ-व्यवस्था, कला, साहित्य, दर्शन, पुरालेख विद्या, मुद्राशास्त्र, पुरातत्त्व, समाजार्थिक निर्माण प्रक्रियाओं तथा दृढ़ ऐतिहासिक पक्ष व विषयों वाले सम्बद्ध विषयों के इतिहास को शामिल किया जा सके।

परिषद तीसरा क्षेत्रिय केन्द्र श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) में उत्तर के लिए तथा दो अन्य क्षेत्रिय केन्द्रों प्रत्येक के लिए एक कोलकत्ता में पूर्व के लिए और पूना में पश्चिम के लिए स्थापित करने पर विचार कर रही है। इस दिशा के इस रिर्पोट के दौरान कुछ प्रगति हुई।

ऐतिहासिक महत्त्व की विषयों पर शोध पत्रिकाओं तथा अन्य प्रकाशनों को आर्थिक सहायता जारी रखने के अतिरिक्त परिषद ने अपने प्रकाशनों को भी प्रकाशित किया है।

परिषद द्वारा इसी क्रम में ''दि इण्डियन हिस्टोरिकल रिव्यु'' नामक छमाही पत्रिका का लगातार प्रकाशन हो रहा है। प्रतिभा को आकर्षित करने तथा ऐतिहासिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से परिषद के दो क्षेत्रिय केन्द्रों ने जिसमें से एक गुवाहटी (असम) में और दूसरा बंगलौर (कर्नाटक) में स्थित है अपने-अपने संबंधित क्षेत्रों में अपने शैक्षिक कार्यकलाप जारी रखे।

परिषद का गठन

आई.सी.एच.आर. परिषद में निम्नलिखित सदस्य सम्मिलित हैं :

- — भारत सरकार द्वारा मनोनीत एक प्रख्यात इतिहासकार जो परिषद का अध्यक्ष होगा;
- — भारत सरकार द्वारा मनोनीत अठारह इतिहासकार;
- — विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का प्रतिनिधि;
- — महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण;
- — महानिदेशक, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार;
- — सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले चार व्यक्ति, जिन्हें भारत सरकार द्वारा मनोनीत किया जाएगा और जिनमें शिक्षा मंत्रालय, संस्कृति विभाग और वित्त मंत्रालय का एक-एक प्रतिनिधि सम्मिलित होगा; और सदस्य-सचिव।

31 मार्च 2008 की स्थिति के अनुसार परिषद का गठन और कुल संख्या, **परिशिष्ट I** में दर्शाई गई है।

परिषद की दो सांविधिक समितियां इस प्रकार हैं—प्रशासनिक समिति और अनुसंधान परियोजना समिति। इसके अलावा, इसकी अन्य समितियां और सलाहकार पैनल हैं जिनमें परिषद के तथा इससे बाहर के सहयोजित सदस्य सम्मिलित हैं। ये हैं : अध्ययन अनुदान/कनिष्ठ अनुसंधान फैलोशिप समिति, विदेश यात्रा अनुदान समिति, सम्पादन मंडल, स्रोत समिति (प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक), प्रकाशन समिति, पुस्तकालय समिति, प्रशासनिक सुधार समिति, आई.सी.एच.आर. दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र सलाहकार समिति (बंगलौर) और आई.सी.एच.आर. उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र सलाहकार समिति (गुवाहाटी)। 31 मार्च 2008 की स्थिति के अनुसार ऐसी सभी समितियों का गठन और संख्या **परिशिष्ट II** और **II क** में दर्शाई गई है।

आई.सी.एच.आर. सचिवालय, जिसके प्रधान सदस्य-सचिव हैं, परिषद के निर्णयों को कार्यान्वित करता है। 31 मार्च 2008 की स्थिति के अनुसार स्टाफ की कुल संख्या **परिशिष्ट III** में दर्शाई गई है। आई.सी.एच.आर. मुख्यालय 35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली–110001 में स्थित है और इसके दो क्षेत्रीय केन्द्र हैं, नामत: आई.सी.एच.आर. दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र (एस आर सी), जो लॉ कालेज बिल्डिंग, 1 पैलेस रोड, बंगलौर (कर्नाटक) में स्थित है तथा अन्य आई.सी.एच.आर. उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र (एन ई आर सी), जो लायब्रेरी एक्सटेंशन बिल्डिंग, गुवाहाटी युनिवर्सिटी, गुवाहाटी (असम) में स्थित है।

2007-2008 आयोजित बैठकें

1. 7 मई 2007 को अनुसंधान परियोजना समिति की 112वीं बैठक सम्पन्न हुई।
2. 2 जुलाई 2007 को अध्ययन अनुदान समिति की 77वीं बैठक हुई।
3. 2 जुलाई 2007 को कनिष्ठ अनुसंधान फेलोशिप की बैठक हुई।
4. विदेश यात्रा अनुदान समिति की बैठक 4 जुलाई 2007 को हुई।
5. 6 जुलाई 2007 को अनुसंधान परियोजना समिति की 113वीं बैठक हुई।
6. प्रशासनिक समिति की 49वीं बैठक 21 जुलाई 2007 को सम्पन्न हुआ।
7. परिषद की विशेष परियोजना, ''डाक्यूमेन्टस ऑफ इकॉनामिक हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश रूल इन इन्डिया 1858-1947'' की सम्पादकीय समिति की बैठक 29 अक्तूबर 2007 को हुई।

8. परिषद की शब्दकोष परियोजना, ''सोशल एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव टर्म्स इन इन्डिया। साऊथ एशियन इन्स्क्रीप्शनस'' पर 29 अक्तूबर 2007 को बैठक हुई।
9. अध्ययन अनुदान समिति की 78वीं बैठक 6 दिसम्बर 2007 को सम्पन्न हुआ।
10. कनिष्ठ अनुसंधान फैलोशिप समिति की बैठक 6 दिसम्बर 2007 को हुई।
11. अनुसंधान परियोजना समिति की 114वीं बैठक 10 दिसम्बर 2007 को सम्पन्न हुई।
12. पाँचवी सलाहकार समिति की बैठक आई.सी.एच.आर. के दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र बंगलैर में 17 दिसम्बर 2007 को सम्पन्न हुई।
13. ''हिस्टोरिओग्राफीक सर्वे सीरीज़ और ट्रान्सलेसन ऑफ हिस्टोरीकल वर्कर्स इन इट्स इन्डियन लैंग्वेज़'' पर सलाहकार समिति की 27 दिसम्बर 2007 को सम्पन्न हुई।
14. हिस्टोरिऑग्राफी एण्ड हिस्टोरीकल मैथडस विषय पर एक्सर्पट कमेटी की बैठक 30 जनवरी 2008 को हुई।
15. आई.सी.एच.आर. की चौथी रिजनल ऐडवाजरी जाँच कमेटी की बैठक 7 मार्च 2008 को उत्तर-पूर्व क्षेत्रिय केन्द्र, गोवहाटी (आसाम) में सम्पन्न हुई।
16. कनिष्ठ अनुसंधान फैलोशिप कमेटी की बैठक 13 मार्च 2008 को हुई।
17. अध्ययन अनुदान समिति की बैठक 13 मार्च 2008 को सम्पन्न हुई।
18. अनुसंधान परियोजना समिति की 115वी बैठक 19 मार्च, 2008 को हुई।

खण्ड *II*

आय

2007-2008

आय

वर्ष 2007-2008 के दौरान आई.सी.एच.आर. को मानव संसाधन विकास मंत्रालय से कुल 9,24,98,000/- रुपए (मात्र नौ करोड़ चौबीस लाख अट्ठानवे हजार रुपए) प्राप्त हुए। इसमें 5,24,99,000/- रुपए (मात्र पांच करोड़ चौबीस लाख निनाव्वे हजार रुपए) योजनेत्तर के रूप में और 3,99,99,000/- रुपए (मात्र तीन करोड़ निनाव्वे लाख निनाव्वे हजार रुपए) योजनागत के रूप में थे। प्राप्ति एवं भुगतान खाते के अनुसार (अग्रिम राशि सहित) आई.सी.एच.आर. ने संपूर्ण अनुदान का खर्च किया, केवल 54/- रुपए (मात्र चौवन रुपये) योजनागत के तहत 1369/- रुपए (मात्र एक हज़ार तीन सौ उन्नतर रुपये) योजनेत्तर के तहत वर्ष संमाप्ति के समय परिषद के पास था।

आई.सी.एच.आर. ने पुस्तकों/ पत्रिकाओं की बिक्री और रायल्टी के रूप में 5,64,248/- रुपए (मात्र पांच लाख चौसठ्ठ हजार दो सौ अड़तालिस रुपए), जिसमें 23,414/- रुपए (मात्र तेईस हज़ार चार सौ चौदह रुपये) योजनागत और 5,40,834/- रुपए (मात्र पांच लाख चालीस हज़ार आठ सौ चौंतीस रुपये) योजनेत्तर भी प्राप्त किया। इस अवधि के संबंध में एक विस्तृत लेखा विवरण तथा वर्ष 2007-2008 के संबंध में आई.सी.एच.आर. के लेखों के संबंध में पृथक लेखा परीक्षा प्रतिवेदन तथा भा.इ.अ.प. के लेखों पर परिषद के उत्तर (एस.ए.आर. के उत्तर) क्रमशः **परिशिष्ट IV** और **V** तथा **V**(क) में दर्शाये गए हैं।

खण्ड *III*

प्रोत्साहन कार्यकलाप

2007-2008

प्रोत्साहन कार्यकलाप

क. अनुसंधान परियोजनाएं, फैलोशिप तथा फुटकर (अध्ययन-सह-यात्रा) अनुदान।

ख. अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/ विदेश स्थित संग्रहस्थलों से स्रोत सामग्री के संग्रह हेतु विदेश यात्रा अनुदान

ग. सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

घ. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् स्थापना दिवस

प्रोत्साहन कार्यकलाप
2007-2008

आई.सी.एच.आर की स्थापना भारत सरकार द्वारा देश में ऐतिहासिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए की गई थी। गुणवत्ता के कठोरतापूर्वक मूल्यांकन और परिणामों पर बारीकी से नजर रखते हुए अनुसंधान और प्रकाशन के लिए निधियों की व्यवस्था करना आई.सी.एच.आर. का एक मुख्य दायित्व है। पिछले वर्षों की भांति आलोच्य वर्ष के दौरान, यह कार्य परिषद की विभिन्न अनुसंधान वित्तपोषण स्कीमों के जरिए किया गया, जिनमें सम्मिलित हैं : फैलोशिप प्रदान करना; अनुसंधान परियोजनाएं; फुटकर (अध्ययन-सह-यात्रा) अनुदान; विदेश यात्रा और विदेश में अनुरक्षण हेतु और विदेशी विद्वानों के दौरों के लिए अनुदान; प्रकाशन सब्सिडी; तथा इतिहासकारों के व्यावसायिक संगठनों के सेमिनारों/ कार्यशालाओं/ सम्मेलनों के लिए अनुदान जो इस प्रकार है–

(क) अनुसंधान परियोजनाएं, फैलोशिप और फुटकर (अध्ययन-सह-यात्रा) अनुदान

परिषद द्वारा आरम्भ की गई अनुसंधान परियोजनाओं, फैलोशिप और फुटकर (अध्ययन-सह-यात्रा) अनुदान स्कीमों के अन्तर्गत अध्येताओं को प्रदत्त अनुसंधान निधियों के संबंध में सूचना नीचे दर्शाई गई है :

वर्ष	अनुसंधान परियोजनाएं	फैलोशिप	फुटकर (अध्ययन-सह-यात्रा) अनुदान	कुल कालम 2+3+4
1	2	3	4	5
1972-73	19	8	1	28
1973-74	8	11	2	21
1974-75	7	14	2	23
1975-76	18	12	15	45
1976-77	21	37	82	140
1977-78	5	21	159	185
1978-79	22	31	115	168
1979-80	18	44	138	200
1980-81	17	94	106	217

1	2	3	4	5
1981-82	49	86	183	318
1982-83	15	135	180	330
1983-84	10	76	59	145
1984-85	30	141	199	370
1985-86	30	88	166	284
1986-87	23	63	138	224
1987-88	32	134	198	364
1988-89	20	104	73	197
1989-90	19	147	88	254
1990-91	18	93	67	178
1991-92	22	107	97	226
1992-93	30	153	51	234
1993-94	12	82	90	184
1994-95	7	59	32	98
1995-96	14	63	83	160
1996-97	4	19	30	53
1997-98	29	93	22	144
1998-99	9	29	45	83
1999-2000	2	6	18	26
2000-2001	11	137	97	245
2001-2002	27	178	66	271
2002-2003	20	293	173	486
2003-2004	18	257	118	393
2004-2005	18	287	111	416
2005-2006	26	169	109	304
2006-2007	57	368	69	494
2007-2008	45	407	123	575

वर्ष 2007-2008 के दौरान इतिहासकारों के पेशेवर संगठनों की एसोसिएशनों/ संस्थाओं/ अध्येताओं को प्रदत्त अनुसंधान निधियों का ब्योरा नीचे दर्शाया गया है :

1. **अनुसंधान परियोजनाएं** - 45
   (क) स्वीकृत - 14
   (ख) जारी है - 31
2. **राष्ट्रीय फैलोशिप 04**
3. **वरिष्ठ अनुसंधान फैलोशिप** - 15
   (क) स्वीकृत - 08
   (ख) जारी है - 07

4. **उत्तर-डाक्टोरल फैलोशिप** - 26
   (क) स्वीकृत - 21
   (ख) जारी है - 05
5. **कनिष्ठ अनुसंधान फैलोशिप** - 362
   (क) स्वीकृत - 205
   (ख) जारी है - 157
6. **विदेशी यात्र अनुदान अनुमोदित** - 34 अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, स्रोतों का संकलन, अतिरिक्त अनुदान आदि सहित।
7. **फुटकर (अध्ययन-सह-यात्रा) अनुदान अनुमोदित** - 123, अतिरिक्त अनुदान और पुनर्वैधीकरण सहित।
8. **प्रकाशन अनुदान अनुमोदित** - 62, शोध निबंध, पाण्डुलिपियां, पत्रिकाएं, सेमिनारों की कार्यवाहियां आदि सहित।
   (क) जी.आई.ए. योजना के तहत प्राप्त पुस्तकें - 22
   (ख) जी.आई.ए. योजना के तहत प्राप्त पत्रिकाएं - 22
   (ग) कार्यवाहियां - 04
9. **सेमिनार/ सम्मेलन/ कार्यशालाएं अनुमोदित** - 88

संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, आई.सी.एच.आर. में प्राप्त प्रत्येक प्रस्ताव की परामर्शदाताओं द्वारा सावधानीपूर्वक जांच-पड़ताल की जाती है और उन्हें विचारार्थ परिषद की अनुसंधान परियोजना समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक प्रस्ताव के गुणों को ध्यान में रखते हुए, परिषद उसका वित्तीय सहायतार्थ अनुमोदन करती है।

जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है कि वर्ष 2007-2008 के दौरान परिषद् ने अनुसंधान परियोजनाओं/ फैलोशिप/ फुटकर (अध्ययन-सह-यात्रा अनुदान)। प्रकाशन के लिए ''ग्रान्ट-इन-एड्'' कार्यक्रम सेमिनारो। विचार गोष्ठियों। सम्मेलनों, परिषद् के स्वयम के प्रकाशनों के लिए आर्थिक सहायता जारी रखा है। उपरोक्त सारणी में दिखाया गया है कि अनुसंधान परियोजना पर, 407 फैलोशिप जिसमें राष्ट्रीय फैलोशिप सम्मिलित है, फुटकर (स्टडी-कम-ट्रेवल-ग्राट) 123 और 34 एफ.टी.जी., 62 प्रकाशन सब्सिडी तथा 88 सेमिनारों। विचार गोष्ठियों सम्मेलनों को वित्तिय सहायता जारी रखा गया है जो ऐतिहासिक महत्व के विषयों पर हैं। वर्ष 2007-2008 के दौरान परिषद् ने सभी अन्य फैलोशिप को जारी रखा (6 महिनों के लिए प्रदत समयावाही विस्तार को छोड़कर)। वर्ष 2007-2008 में परिषद ने ग्रान्ट-इन-एड् योजना के तहत 22 पुस्तकों, 22 पत्रिकाओं तथा 4 प्रॉसीडिंग प्रकाशनों के पश्चात् प्राप्त किया।

यह देखा जा सकता है कि पिछले वर्षों के दौरान परिषद की विभिन्न योजनाएं लोकप्रिय हुई हैं। परिणामस्वरूप, आवेदकों की संख्या में कई गुणा वृद्धि हुई है।

(ख) अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/विदेश स्थित संग्रह स्थलों से स्रोत सामग्री के संग्रह हेतु विदेशी यात्रा अनुदान

इस अवधि के दौरान 34 अध्येताओं को परिषद (भा.इ.अ.प.) से विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/ कांग्रेसों में भाग लेने के लिए और विदेश स्थित विभिन्न संग्रह स्थलों से अपने अनुसंधान कार्य से संबंधित स्रोत सामग्री के संग्रह हेतु, जो हमारे देश में उपलब्ध नहीं है, वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। विवरण के लिए कृपया **परिशिष्ट XI** देखें।

(ग) सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम 2007-2008

निम्नलिखित विद्वान उम्मीदवरों को इण्डो-फ्रेन्च सी.ई.पी. के तहत फ्रान्स यात्रा के लिए चयन का निर्णय लिया गया।

(1) (*i*) नन्दनी सिन्हा कपूर (प्राचीन भारत), रीडर, इतिहास विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

(*ii*) नदीम रीज़वी (मध्य भारत), रीडर, सेन्टर ऑफ एडवान्स स्टडी इन हिस्ट्री, अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

(*iii*) इन्दीवर कमतेकर (आधुनिक भारत), एसोसियेट प्रोफेसर, सेन्टर फॉर हिस्टोरिकल स्टडीज, स्कूल ऑफ सोशल साइन्सेज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

(2) इण्डो-रशियन सी.ई.पी. के अधीन उम्मीदवार विश्वमोहन झा, मयूर आर्पटमेन्टस, सेक्टर 9, रोहिणी, दिल्ली को मनोनित किया गया।

(घ) भा.इ.अ.प. स्थापना दिवस

भा.इ.अ.प. ने अपना 36वां स्थापना दिवस 27 मार्च 2008 को कान्शीस्टीटयूसन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली में मनाया गया। उस कार्यक्रम का मुख्य आर्कषण प्रो. मुशिरूल हसन, प्रो. विमल प्रसाद तथा प्रो. सुमित सरकार द्वारा सम्पादित तीन पुस्तकों का लोकार्षण मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री अर्जुनसिंह द्वारा किया गया। इन विद्वान सम्पादकों को परिषद् ने सम्मानित किया।

इस अवसर पर परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''इन्स्क्रीपशन ऑफ दि विजयनगर रूलरस'' (खण्ड-II) जिसका संयुक्त सम्पादन श्रीनिवास रीत्ती और बी.आर. गोपाल द्वारा दिया गया, की भी प्रदर्शनी लगाई गई।

पुस्तकों लोकार्षण कार्यक्रम का अनुसरण करते हुए सातवी स्थापना दिवस पर प्रसिद्ध इतिहासकार प्रोफेसर सतीश चन्द्र द्वारा ''सोशल एण्ड ऐटिटयूटनल चेन्ज इन मेडिवियेल इन्डिया (13वीं-17वीं शताब्दी)'' विषय पर व्याख्यान हुआ।

व्याख्यान के पश्चात् पुरस्कार वितरण समारोह हुआ जिसमें आई.सी.एच.आर. के कर्मचारियों को पुरस्कार दिया गया जिन्होंने 14 सितम्बर से 30 सितम्बर 2007 तक परिषद् के प्रागण में आयोजित ''हिन्दी पखवाड़ा।'' में अपनी विशिष्टताओं को प्रमाणित किया था।

स्थापना दिवस समारोह के समापन के दौरान परिषद के सदस्य सचिव, डॉ. वाई चिन्ना राव, द्वारा समापन धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया गया।

खण्ड *IV*

आई सी एच आर प्रकाशन

2007-2008

आई सी एच आर प्रकाशन
2007-2008

निम्नलिखित पुस्तकें 2007-2008 के दौरान प्रकाशित हुई हैं।

प्रकाशित पुस्तकें

अंग्रेजी

1. इंस्क्रीप्शंस ऑफ दी विजयनगर रूलरस, खण्ड II, एस.एच. रीत्ती और बी.आर. गोपाल द्वारा सम्पादित
2. टूवाड्र्स फ्रीडम : 1939 खण्ड 1, मुशीरूल हसन द्वारा सम्पादित, सब्यसाची भट्टाचार्य (प्रधान सम्पादक)
3. टूवाड्र्स फ्रीडम : 1939, खण्ड-2, मुशीरूल हसन द्वारा सम्पादित, सब्यसाची भट्टाचार्य (प्रधान सम्पादक)
4. टूवाड्र्स फ्रीडम : 1945, बिमल प्रसाद द्वारा सम्पादित, सब्यसाची भट्टाचार्य (प्रधान सम्पादक)
5. टूवार्डस फ्रीडम : 1946, खण्ड 1 सुमित सरकार द्वारा सम्पादित, सब्यसाची भट्टाचार्य (प्रधान सम्पादक)
6. नार्थ-ईस्ट इन्डिया : इन्टरपरेटिन्ग दी सोंसेस ऑफ इट्स हिस्ट्री, आर. बेजबरूआ आदि द्वारा सम्पादित
7. री-थिन्कीन्ग 1857 : क्लेक्शन ऑफ पेपर (पेपर बैक संस्करण पाठ) सब्यसाची भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित

बंगला

8. फाउन्डेशनस ऑफ मुसलिम रूल इन इन्डिया, ए.बी.एम. हबीबुल्लाह द्वारा

तमिल

9. दि चोलस–खण्ड 1 और 2, के ए.एन. शास्त्री (द्वितीय संस्करण) द्वारा
10. दि कल्चर एण्ड सिविलिजेशन ऑफ एश्यिन्ट इन्डिया इन हिस्टोरिकल आउटलाईन, डी.डी. कोशाम्बी द्वारा लिखित।

कन्नड

11. इन्डियन फ्यूडलिज़म, आर.एस. शर्मा द्वारा लिखित

आई. सी. एच. आर. का प्रकाशन

12. दि इन्डियन हिस्टोरिकल रिव्यु–खण्ड *XXXV* अंक 1 (जनवरी 2008), अनूप तनेजा द्वारा सम्पादित
13. आई.सी.एच.आर. वार्षिक रिपोर्ट 2006-2007
14. रीसर्च फन्डीग रूल्स (10 दिसम्बर 2007 तक संशोधित)
15. आई.सी.एच.आर. न्यूजलेटर–खण्ड 7, अंक 1 (जनवरी से सितम्बर 2007 तक)

निम्नलिखित क्रम संख्या 1 से 42 तक पुस्तकों का प्रकाशन चल रहा है।

अंग्रेजी

1. इरिगेशन इन इंडिया 1858-1901 : सेलेक्ट डाक्यूमेन्ट, दुर्गा प्रसाद भट्टाचार्य द्वारा संपादित।
2. ऐग्रीकल्चर इन इंडिया 1858-1901 : सेलेक्ट डॉक्यूमेन्ट्स, दुर्गा प्रसाद भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित।
3. थ्री मिलेनियम ऑफ कन्टेक्स : इण्डिया, रशिया एण्ड सेन्ट्रल एशिया (सेमिनार कार्यवाही), भा.इ.अ.प. द्वारा इण्डो-रसियन कल्चरल ऐक्सचेंज प्रोग्राम के तहत आयोजित सेमिनार, आर.सी. अग्रवाल और पी.के. शुक्ला द्वारा सम्पादित।
4. कोरपस ऑफ इस्टर्न खरोष्टी एण्ड खरोष्टी ब्राह्मी इन्स्क्रीपशनस, बी.एन. मुखर्जी द्वारा।
5. डायलॉग विद पास्ट : ट्रेन्डस इन हिस्टोरिकल राइटिंग्स इन इण्डिया (भा.इ.अ.प. द्वारा 2003 में हुई बंगलौर सेमिनार की कार्यवाही)।
6. सर्वे एण्ड कैलेण्डर ऑफ मराठी (मोदी) डॉक्यूमेंट्स (1600-1818) इन फाइव वॉल्यूम, वी. टी. गुणे द्वारा संकलित।

बंगला

7. इन्डोग्रीक ए. के. नारायण द्वारा।

मराठि

8. पर्सनलिटी ऑफ इण्डिया, बी. सुब्बा राव द्वारा
9. सोसाइटी एट दि टाइम ऑफ बुद्धा, एन. वागले द्वारा
10. सुल्तान महमूद ऑफ गजनी, एम. हबीब द्वारा
11. हिस्ट्री आफ इण्डियन एण्ड इन्डोनेशियन आर्ट, ए कुमारास्वामी द्वारा।
12. इन्डियन इपिग्राफी, डी.सी. सरकार द्वारा

पंजाबी

13. बंगाल रिनेस्सियेन्स एण्ड अदर एसेज़, एस.सी. सरकार द्वारा।
14. शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, जे.एन. सरकार द्वारा।

15. कम्युनलिज्म एण्ड दि राइटिंग ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, रोमिला थापर आदि द्वारा।
16. इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया (1837-1900), आर.सी. दत्त द्वारा।
17. ए हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, खण्ड 1, रोमिला थापर द्वारा।
18. प्राइवेट इन्वेस्टमेन्ट इन इण्डिया, ए.के. बागची द्वारा।
19. रेवेन्यू सिस्टम इन पोस्ट-मौर्यन एंड गुप्ता टाइम्स, डी.एन. झा द्वारा।
20. एडमिनिस्टराटीव स्सिटम ऑफ दि मराठा, एस.एन. सेन द्वारा।
21. सोसाइटी एट दि टाइम ऑफ बुद्धा, एन. वागले द्वारा।
22. अशोका एण्ड दि डिक्लाइन ऑफ मौर्याज़, रोमिला थापर द्वारा।
23. प्रोविंसियल गवर्नमेंट ऑफ दि मुगलस, पी.सरन, द्वारा।
24. इण्डिय फियूडलिज्म, आर.एस. शर्मा द्वारा।
25. इंडिया एट दि डेथ ऑफ अकबर, डब्ल्यू.एच. मोरलैंड।
26. ब्रिटिश पॉलिसी इन इंडिया, एस. गोपाल।
27. इण्डिया टुडे, आर.पी. दत्त द्वारा।
28. स्वदेशी मूवमेंट इन बंगाल, सुमित सरकार।
29. दि कल्चर एण्ड सिविलाइजेशन आफ एनशिएन्ट इण्डिया इन हिस्टोरिकल आउटलाइन, डी.डी. कौशम्बी द्वारा।
30. पार्टीज़ एण्ड पालिटिक्स एट दि मुग़ल कोर्ट, सतीश चन्द्र द्वारा।
31. 1857, एस.एन. सेन द्वारा।

तमिल

32. रेवेन्यू सिस्टम इन पोस्ट-मौर्य एण्ड गुप्ता टाईम, डी.एन. झा द्वारा।
33. हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड इन्डोनेशियन आर्ट, ए. कुमार स्वामी द्वारा।

कन्नड

34. सलेवरी इन एनशिएन्ट इण्डिया, देव राज चानना द्वारा।
35. ब्रिटिश रिलेशन्स विद हैदर अली, बी शेखअली द्वारा।
36. पार्टीज एण्ड पॉलिटिक्स एट दि मुग़ल कार्ट, सतीश चन्द्र द्वारा।
37. ओरिजनस ऑफ इन्डियाज फॉरेन पालिसि, विमल प्रसाद द्वारा।
38. ए कम्पाराटिव हिस्ट्री ऑफ इन्डिया (खण्ड V), एम. हबीब और के.ए. निजामी द्वारा।
39. एडमिनिसट्रेटिव सिस्टम ऑफ दि मराठा (खण्ड 1 तथा 2) एस. एन. सेन द्वारा।
40. कॉन्टरीबुसंस टू दि हिस्ट्री ऑफ हिन्दू रेवेन्यू सिस्टम, यू.एन. घोषाल द्वारा।
41. इन्डिया इन ट्रान्जीसिन, एम.एन. रॉय द्वारा।
42. फिनानसियल फाउन्डेशन ऑफ दि ब्रिटिश राज़, एस.भट्टाचार्य द्वारा।

खण्ड *V*

पत्रिका : दि इण्डियन हिस्टोरिकल रिव्यु

2007-2008

पत्रिका : दि इण्डियन हिस्टोरिकल रिव्यु
2007-2008

दि इन्डियन हिस्टोरीकल रिव्यु 1974 से प्रकाशित किया जा रहा है, जो आई.सी.एच.आर. की 'रेफरी' पत्रिका हैं इसका महत्व इतिहास में अनुसंधानों को एक पीढी से दूसरी पीढी में अंतरित होने के परिणामों का है। उच्च अकादमीक और सम्पादकीय स्तरों के अतिरिक्त भिन्न समयों में व्यापक और नपातुला विवरण प्रस्तुत करके पत्रिका ने विस्तृत पहचान को प्राप्त किया है। इन्डियन हिस्टोरीकल रिव्यु उन लेखों का प्रकाशन करता है जो एक विशेष प्रकृति जैसे कुछ विशेष विषयों पर केन्द्रित हों। पत्रिका में लेख, रिव्यु लेख, पुस्तकों की समीक्षा व पत्र व्यवहार का प्रकाशन करना ही इमेशा इसकी विशिष्ठता रही है। विचाराधीन अवधी में इस दौरान इन्डियन हिस्टोरीकल रिव्यु की प्रगति के बारे में निम्नलिखित विवरण है :

1. दि इण्डियन हिस्टोरिल रिव्यु, खंड XXXIV, संख्या 2 (जुलाई 2007) का लोकार्पण इन्डियन हिस्ट्री काग्रेस के सम्मेलन के दौरान दिल्ली में हुआ अनूप तनेजा द्वारा सम्पादित इस खण्ड के निम्नलिखित समीक्षा लेखों का प्रकाशन हुआ हैं :

लेख

राजन गुरुक्करन, शिफ्ट ऑफ ट्रस्ट फ्रॉम वर्डस टू डीडस : इम्लिकेशन्स ऑफ दि प्रोलिफेरशन ऑफ इमिग्राफस इन दि तमिल साऊथ।

शंकर गोयल, दि मीथ ऑफ दि वैकटका कॉउन्स

इन्द्राणी सेन, जेन्डरिंग दि रिवेलियन ऑफ 1857 दि 'लोयल इन्डियन विमेन' इन 'मुटिनी फिक्सन'

लतासिंह, कोर्टसनस एण्ड दि 1857 रिवोल्ट : रोल ऑफ अजीजूम इन कानपुर

एस. इरफान हबीव, शहीद भगत सिंह एण्ड हिज़ रेवोल्यूशनरि इन्हेरीटेन्स

अर्पिता सेन, दि प्रोस्क्रीपसन ऑफ एन आईरिस रेक्स एण्ड दि चित्तगोन्ग राजिन्ग ऑफ 1930

के. वेणुगोपाल रेड्डी, कांग्रेस मिनिस्ट्री एण्ड दि लेबर पॉलिसी, 1937-1939 मद्रास प्रेशिडेन्सी

वन्दना जोशी, 'नेबरहूड टरिविया' एंड 'कॉफी पार्टीज़' : हैटरेड एण्ड मैलिस इन दि रोटनिटेरियन नाज़ि रेज़िम

रिव्यु लेख

कृष्ण मोहन श्रीमाली, राइटिन्ग इन्डियाज एंशियन्ट पास्ट

दीपक कुमार, एन इम्पिरियल अपॉलोजि

2. ***दि इण्डियन हिस्टोरिकल रिव्यु,*** खंड XXXV, अंक 1 (जनवरी 2008), का 27 मार्च 2008, आई.सी.एच.आर. के स्थापना दिवस पर लोकार्पण किया गया। अनूप तनेजा द्वारा सम्पादित इसमें निम्नलिखित लेखों को समावेशित किया गया :

लेख

एन. करशिमा वाई. शुब्बरायलु और पी. शनमुगम, नागराम डियूरिंग दि चोल एण्ड पांडयान पिरियड : कॉमर्स एण्ड टाऊनस इन दि तमिल कन्टरी ए.डी. 850-1350।

परीमला वी. राव, वीमेन एज इनडायेरेक्ट बैनेफिशियरिज़ इन इलिट कॉनफ्लिक्ट इन प्रिन्सलई मैसूर, 1860-1920

अरविन्द गनचारी, केशव चन्द्रा सेन बम्बई विजिट (1864) एण्ड दिन रिस्पान्स आफ 'यन्ग बम्बई' : कॉनटयूरस ऑफ रिर्फाम मूवमेन्टस इन वेर्स्टन इन्डिया

आई. थिरूमली, दि इम्मिनेन्ट फाल : कल्चरल पॉलिटिक्स एण्ड दि डाऊनफाल ऑफ निज़ामस डॉमिनियनस

जयन्ती भट्टाचार्य, कॉलोनियल कैपिटल एण्ड नेशनल रीट्रीइव : प्रोफाईल ऑफ एन इन्टरप्रेन्यूर

अर्पणा बासु, वीमेन्सज स्ट्रगल फॉर दि वोट : 1917-1937

कौशिक रॉय, एक्सि सैटेलाइट आर्मीज ऑफ वर्ल्ड वार सेकन्ड : ए केश स्टडी आफ दि आजाद हिन्द फौज 1942-45

एम.पी. सिंह और रवि पी. भाटिया, फाउन्डेशन एण्ड हिस्टोरिकल इवोल्यूसन ऑफ इन्डियन कॉन्सटीटूटिनिज़म

रिव्यु लेख

रीला मुखर्जी, फ्राम दि माऊनेटन्स टू दि सीज़ : सेन्ट्रल ऐशिया इन दि मैरिटाईम वल्ड ऑफ दि इन्डियन आशिएन

सब्यसाची दासगुप्ता, दि मराठास इन 1803 : इफेक्ट पावर आर अन-लक्की लूज़रस

इन दौरान जनरल यूनिट को डॉ. लता सिंह की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई जो इन्डियन हिस्टोरिकल रिव्यु के विशेष अंक में जिसका विषय ''जेन्डर स्टडीज़'' है वह खण्ड XXXV, सख्या 2 (जुलाई 2008) में प्रकाशित होगा।

आई.सी.एच.आर. न्यूजलेटर

इसके अतिरिक्त, आई.सी.एच.आर. ने न्यूजलेटर का निम्नलिखित संस्करण प्रकाशित किया है :

आई.सी.एच.आर. न्यूजलेटर, खण्ड 7, संख्या 1 (जनवरी-सितम्बर 2007) : इस न्यूजलेटर में 1857 की 150वीं जयंती पर विशेष लेख समाहित किया गया है।

खण्ड *VI*

भा.इ.अ.प.
विशेष अनुसंधान परियोजनाएं
2007-2008

भा.इ.अ.प. की विशेष अनुसंधान परियोजनाएं

1. **टुवार्ड्स फ्रीडम परियोजना**
2. **डाक्युमेन्ट ऑन इकानॉमिक हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश रूल इन इंडिया :** 1858-1947
3. **डिक्शनरी ऑफ सोशल एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव टर्म्स इन इंडियन/साऊथ एशियन इन्सक्रिप्शंस**
4. 1857 **परियोजना**

आई सी एच आर विशेष परियोजनाएं
2007-2008

परिषद् द्वारा कार्यन्वित मुख्य परियोजनाएं जो प्रसिद्ध विद्वानों के देख-रेख में हो रही हैं, की सन्तोषजनक प्रगति हुई है।

इसका विवरण नीचे दिया गया है :

1. टुवाड्र्स फ्रीडम परियोजना

डाक्यूमेन्टस ऑन दि मूवमेन्ट फॉर इन्डेपेडेन्स इन इन्डिया-1946, खण्ड 1, के पश्चात निम्नलिखित दो खण्डों का प्रकाशन किया गया।

- डाक्यूमेन्टस ऑन दि मूवमेन्ट फॉर इन्डेपेडेन्स इन इन्डिया–1945, प्रोफेसर विमल कुमार द्वारा सम्पादित
- डाक्यूमेन्टस ऑन दि मूवमेन्ट फॉर इन्डेपेडेन्स इन इन्डिया–1939, खण्ड 1, प्रोफेसर मुशिरूल हसन द्वारा सम्पादित।

उपरोक्त खण्डों का 1946 वाले खण्ड के साथ आई.सी.एच.आर. के स्थापना दिवस 27 मार्च 2008 को श्री अर्जुनसिंह मानव संसाधन विकास मन्त्री, भारत सरकार, द्वारा लोकार्पण किया गया। इसके अतिरिक्त 1939 खण्ड के दूसरे भाग को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया और 1946 के द्वितीय भाग को प्रकाशन के लिए तैयार किया गया। 1940 के खण्ड जिसका सम्पादन प्राफेसर के.एन. पाणिक्कर ने किया, को अन्तिम रूप देने का कार्य किया गया और 1941 के खण्ड के लिए स्रोत को एकत्रित किया गया था।

1942 और 1947 के खण्डों को अन्तिम रूप देने में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई, इन खण्डों के सम्पादक प्रोफेसर बिपन चन्द्रा और प्रोफेसर सुचेता महाजन हैं।

2. डाक्युमेन्ट ऑन इकेनॉमिक हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश रूल इन इंडिया : 1858-1947

इस परियोजना का आरम्भ अप्रैल 1992 में संग्रहित और प्रकाशन श्रृंखला खण्डों का शीर्षक ''अफेक्टिंग दि इकोनोमिक लाइफ ऑफ इंडिया ड्यूरिंग दि ब्रिटिश रूल : 1858-1947'' रहा। इनके निम्नलिखित विषय हैं :

जनसंख्या पर दस्तावेज; कीमतें और मजदूरी; कृषि; सिंचाई; किराएदारी; किराया और आवास; अकाल; विनिमय और मुद्रा; बैंक (महाजनी), साख और पूंजी आंदोलन; रेलवे; मूल्य सूची और वित्तीय नीतियां; हथकरघा उद्योग; आधुनिक उद्योग, खानें; वृक्षारोपण; विदेश व्यापार और कर; जीवन की स्थिति; राष्ट्र की प्रत्येक व्यक्ति आय और ऋण (देनदारी)।

इस समय प्रो. अमिया कुमार बागची, निर्देशक, डवलपमेन्ट स्टडीज, कोलकात्ता, मुख्य सम्पादक, के अधीन रेलवे तथा अन्य कई विभिन्न खण्डों पर कार्य हो रहा है जिसके भिन्न-भिन्न विषय हैं। आई.सी. एच.आर. ने रेलवे एक्ट (खण्ड-*IV*वा) पर एक खण्ड तथा बंगाल प्रेसीडेन्सी से संबद्ध एक खण्ड, भाग-I, प्राप्त किया। यह कार्य सन्तोषजनक प्रगति पर है।

3. डिक्शनरी ऑफ सोशल एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव टर्म्स इन इंडियन/साऊथ एशियन इन्सक्रिप्शंस

इस परियोजना की इस रिर्पोट के दौरान बहुत अच्छी प्रगति रही है। प्रोफेसर के.एम. श्रीमाली के सम्पादकीय के तहत इस परियोजना के खण्ड के लिए जो नॉर्थ इण्डियन इन्सक्रिप्शंस से संबद्ध है, लगभग 3400 कार्डो को दिल्ली में कम्प्यूटराइज्ड किया गया। साऊथ एशियन इन्सक्रिप्शंस के मुख्य सम्पादक डॉ. के.वी. रमेश ने परिषद को खण्ड 1 की पाण्डुलिपि को दिसम्बर 2008 के अन्त तक प्रस्तुत करने का आश्वासन दिया। अलीगढ़ यूनिट जो प्रोफेसर इरफान हबीब मुख्य सम्पादक की देखरेख में कार्यरत है, ने अरबिक, परशियन और उर्दू इन्सक्रिप्शंस से सम्बन्धित खण्डों में सन्तोषजनक प्रगति की और आशा है कि इस खण्ड को इस वर्ष के अन्त तक प्रस्तुत किया जायेगा।

4. 1857 परियोजना

इस रिपोर्ट की अवधि के दौरान निम्नलिखित व्याख्यान, सेमिनारों, सम्मेलनों को आ.सी.एच.आर. के द्वारा प्रायोजित किया गया :

(क) सेमिनार/सम्मेलन

अप्रैल 2007

1. आई.सी.एच.आर. के अनुदान के माध्यम से लक्ष्मीबाई कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने 3 अप्रैल 2007 को एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय ''दि राईजिन्ग ऑफ 1857 : न्यू पर्सपेक्टिवस'' था। प्रोफेसर अर्पणा बासु, टी.के. वेयन्कट सुबरामनियन, प्रो. एस. जेड. एच. जाफरी, श्री शबी अहमद (आई.सी.एच.आर.), प्रो. बी.पी. साहू, डॉ. रिजवान कैसर और डॉ.पी.के. शुक्ला मुख्य वक्ता रहे, जिन्होंने मुख्य रूप से समकालीन स्मरणों, चश्मदीद गवाहों के विवरण, उपनिवेशीय लेखों, समकालीन स्वदेशी वृतांन्तों आदि पर रोशनी डाली।
2. शाह वलीउल्लाह इन्स्टीटयूट (नई दिल्ली) द्वारा आई.सी.एच.आर. के वित्तिय सहयोग से दो दिन का एक राष्ट्रीय सेमिनार, 9-10 अप्रैल 2007 को जामिया मिलिया इस्लामिया में आयोजित किया गया। विषय ''दि फर्स्ट वार ऑफ इन्डिपेनडेन्स बीथ ए स्पेशल रेफरेन्स टू उर्दू न्यूज पेपरस'' था। इसका उद्घाटन दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमति शीला दीक्षित द्वारा किया गया। उन्होंने आजादी की लड़ाई में उर्दू भाषा की भूमिका पर रोशनी डाली। हरियाणा के राज्यपाल डॉ. ए.आर. किदवई, ने सेमिनार को सम्बोधित किया। प्रसिद्ध इतिहासकारों व विद्वानों ने अपने पर्चे प्रस्तुत किया। आई.सी.एच.आर. के प्रतिनिधि श्री शबी अहमद ने ''इम्पोरटेन्स एण्ड कोंसेस ऑफ 1857 मूवमेन्ट'' विषय पर अपना पर्चा पड़ा।

3. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित दो-दिन का राष्ट्रीय सेमिनार जिसका विषय ''री-थिन्कींग एण्ड री-इन्वेन्टीन्ग दि ग्रेट रिवोल्ट ऑफ 1857'' था जो कोरपस अनुसंधान संस्थान द्वारा 18-19 अप्रैल 2007 को लॉरेंटो कॉलेज (जादवपुर विश्वविद्यालय) में आयोजित किया गया। वक्ताओं ने समकालीन स्मरणों, उन निवेशी इतिहास-लेखन तथा नागरिक जनसंख्या की सहभागिता पर चर्चा किया। डॉ. सुरेन्द्र गोपाल, सुमन्त नियोगि, मजीद सिद्दीकी आदि मुख्य वक्ता थे।
4. राईजिंग ऑफ 1857 : लिटेरेरी रेस्पान्सेस विषय पर मॉडन इन्डियन लैन्गवैजिज एण्ड लिटरेसी स्टडीज़ (दिल्ली विश्वविद्यालय) में 19-20 अप्रैल 2007 को दो-दिन का सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार को डॉ. पी.के. शुक्ला, प्रो. एन.डी. मीराजकर, सी. रविन्द्रन, मल्या खाऊनड, नर्गिस जहान तथा भगवती शर्मा, टी. एस. सत्यनाथ, चारूगुप्ता एवं बालाजी रंगानाथन ने सम्बोधित किया। विद्रोह का जवाब हिन्दी, उर्दू, मराठी, गुजराती, बंगाली, असमिया मनीपुरी, फ्रेन्च, अंग्रेजी एवं परशियन साहित्यों पर सेमिनार में चर्चा हुई।
5. आई.सी.एच.आर. प्रायोजित एक दिन का सेमिनार, 23 अप्रैल 2007, को वीर कुवर सिंह फाऊन्डेशन द्वारा जी.एन.जी. बालयोगी असेम्बली संसद भवन (नई दिल्ली) में आयोजित किया गया। श्री अर्जुन सिंह, मानव संसाधन विकास मन्त्री, प्रो. एस. भट्टाचार्य, प्रो. नामवर सिंह, प्रो. भीष्म नारायण सिंह तथा प्रो. अजय तिवारी द्वारा सेमिनार को सम्बोधित किया गया।
6. आई.सी.एच.आर. के वित्तीय सहायता से 25-27 अप्रैल 2007 को तीन दिन का एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया जिसका विषय ''आई-विटनेस अकाउन्ट्स एण्ड दि ब्रिटिश हिस्टोरियोग्राफी ऑन दि रिवोल्ट ऑफ 1857'' का जिसे मनोनमनियम सुन्दरम् विश्वविद्यालय तिरुनेवेलज (तमिलनाडु) द्वारा आयोजित किया गया, विद्वानों तथा प्रसिद्ध इतिहासकारों जैसे प्रो. पी. जगदीशन, प्रो. ए. रामास्वामी, डॉ. डी.एन. त्रिपाठी, डॉ. एस. सत्तार, डॉ. वाई वैन्कुन्टम आदि ने सेमिनार में उपरोक्त विषय पर अपने-अपने पर्चे प्रस्तुत किये।
7. आई.सी.एच.आर. के आर्थिक सहयोग से ''दि 150वीं अनिवेरसरई ऑफ दि ग्रेट रिवोल्ट ऑफ 1857'' विषय पर इतिहास विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय (कोलकत्ता) द्वारा 26-27 अप्रैल 2007 को दो दिन का एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। विभिन्न कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों से लगभग 100 विद्वानों ने सेमिनार में भाग लिया। डॉ. निशान्त मंजर, जामिया मिलिया, नई दिल्ली, डॉ. सब्यासाची दास गुप्ता, डॉ. एस. सरवत मोरशीद, डॉ. खैरुल इस्लाम ने अन्य विशिष्ठ भागीदारों के साथ व्याख्यात्मक तरीके से सेमिनार के विषय पर चर्चा किया। प्रो. रंजीत सेन, प्रो. निखिलेश गुहा, प्रो. सुमित मुखर्जी, प्रो. चित्तव्रत पलित, प्रो. गोतम भोदरा आदि स्थानीय भागीदार रहे।

मई 2007

8. 2 मई 2007 को दी आपराईजिंग ऑफ 1857 विषय पर आई.सी.एच.आर. ने एक विचार-गोष्ठी का इन्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर (आई.आई.सी.), नई दिल्ली में आयोजित किया। इसका उद्घाटन मानव संसाधन विकास मन्त्री, श्री अर्जुन सिंह ने किया, गोष्ठी को विशिष्ट इतिहासकारों तथा बुद्धिजीवियों, अन्य महत्त्वशाली प्रो. सतीशचन्द्रा, प्रो. एम.एल शर्मा, वाईस-चैयरमैन, यू.जी.सी., प्रो. डी.एन. झा, प्रो. के.एम. श्रीमाली, प्रो. अर्जुन देव, प्रो. आर.एल. शुक्ला, प्रो. मृदुला मुखर्जी तथा

प्रो. ए.के. गुप्ता ने सम्बोधित किया। प्रो. इरफान हबीब, वासुदेव चट्टोउपाध्य व एन. राजेन्द्रन जैसे वक्ताओं ने भाषण दिया। आई.सी.एच.आर. द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन प्रो. इरफान हबीब ने किया। विशिष्ठ इतिहासकारों तथा मीडिया द्वारा गोष्ठी में भाग लिया गया।

9. रिवोल्ट ऑफ 1857 इन असम–ए रेटरोस्पेक्ट विषय पर डिबरुगढ़ विश्वविद्यालय (आसाम) द्वारा 19 मई 2007 को एक दिन का सेमिनार आयोजित किया गया। उत्तर-पूर्व क्षेत्रों के विद्वानों ने सेमिनार में भाग लिया। प्रस्तुती और परिचर्चा का विषय ''भारतीय भाषाओं में समकालीन स्वदेशी वर्णनों, क्षेत्रिय इतिहास तथा उप-महादीप बृहद-परिप्रेक्ष्य 19 शताब्दी के मध्य में नागरिक अशांति'' रहा। प्रोफेसर डेविड रीड सिए तथा बासुदेव चटर्जी मुख्य भागीदार रहे।

जुलाई 2007

10. खुदाबक्श ओरियन्टल लाईब्रेरी (पटना) ने आई.सी.एच.आर. के सहयोग से ''बिहार एण्ड 1857'' 24-25 जुलाई 2007 को दो दिन की गोष्ठी का आयोजन किया। गोष्ठी का उद्घाटन बिहार के मुख्यमंत्री श्री नितिश कुमार द्वारा किया गया। प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. आर.एस; शर्मा ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने 1857 के असख्य अनजान शहीदों के भागीदारी से जुड़े दास्तावेजों की आवश्यकता के महत्व पर कहा। और इन्हें भारतीय इतिहास का हिस्सा बनाने को कहा। डॉ. पी.के. शुक्ला, प्रोफेसर अर्जुन देव, प्रो. अमर फारुखी, डॉ. आई. के. चौधरी, प्रो. वाई.डी. प्रसाद, प्रो. आर. मिश्रा, प्रो. कमेश्वेर प्रसाद, प्रो. पी.एन. दास और प्रो. सुनीता शर्मा ने गोष्ठी में भाग लिया।

अगस्त 2007

11. आई.सी.एच.आर. के अनुदान के साथ ''दि इवन्टस ऑफ 1857 एण्ड इट्स सिग्नीफिकेन्स इन मॉउन इन्डियन हिस्ट्री'' विषय पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस में 9-11 अगस्त 2007 को 2 दिन के सेमिनार का आयोजित किया गया। प्रतिष्ठित इतिहासकारों और क्षेत्रों से आये विद्वानों ने अपने पर्चे प्रस्तुत किये। उन्होंने समकालीन विवरण वर्णन क्रान्ति के प्रति विभिन्न रूझान घटनाएं व विषय ब्रिटिश बोध तथा भारतीय बोध आदि पर चर्चा किया। प्रो. एस.भट्टाचार्य, प्रो. एस.एन. आर. रिजवी, प्रो. पंकज राग, अवधेश प्रधान और डॉ. पी.के. शुक्ला के साथ प्रसिद्ध विधानों ने सेमिनार में भाग लिया।
12. 10-11 अगस्त 2007 को आई.सी.एच.आर. ने ग्रान्ट-इन-एड् योजना के तहत ''पीपुल्स रोल इन अपराईजिग-दिल्ली एण्ड इट्स नैबरिंग रीजन'' विषय पर सूरजमल मैमोरियल एजूकेशन सोसायटी नई दिल्ली में दो दिन के राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया। सेमिनार का उद्घाटन प्रोफेसर सब्यासाची भट्टाचार्य अध्यक्ष, आई.सी.एच.आर द्वारा किया गया। प्रो. मुश्रिरूल हसन, प्रो. के.सी. यादव, प्रो. गीता श्रीवास्तव, प्रो. सूरजभान, प्रो. एस.जेड.एच. जाफरी, प्रो. सुषमा यादव आदि के साथ अन्य प्रसिद्ध वक्ताओं ने अपने पर्चे पढ़े तथा इस विषय पर विस्तार से चर्चा किया।

सिम्तबर 2007

13. आई.सी.एच.आर. के आर्थिक सहयोग से खुदा बक्श ओरियन्टल लाईब्रेरी (पटना) द्वारा 8-9 सितम्बर 2007 को ''1857 एण्ड बिहार : ए रिथिन्कींग'' विषय पर दो दिन के सेमिनार का आयोजन किया गया। श्री वृषन पटेल, मानव संसाधन विकास मन्त्री (बिहार सरकार) द्वारा सेमिनार का उद्घाटन किया गया। प्रोफेसर वासुदेव चटर्जी ने नीति निर्धारक भाषण दिया। इन्हें 1857 की घटनाओं पर पुन: अध्ययन की आवश्यकता, म्यादिक रिकार्ड और उपलब्ध ज्ञान पर रोशनी डालने की आवश्यकता पर बल दिया। विभिन्न विद्वानों द्वारा लगभग 20 पर्चे प्रस्तुत किया गया। प्रोफेसर इकबाल हुसैन, प्रो. एन.एन.पी. सिंह और डॉ. लता सिंह, डॉ. विश्वमोई पति, डॉ. शशांक सिन्हा, अशफाक अली (आई.सी.एच.आर.) एस.एस. प्रसाद तथा सुनिता शर्मा ने अन्य विद्वानों के साथ सेमिनार में भाग लिया।
14. आई.सी.एच.आर. के अनुदान के तहत 15-16 सितम्बर 2007 को राँची विश्वविद्यालय में दो-दिन का राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जिसका विषय ''1857 अपराईजिंग–दि फर्स्ट वार ऑफ इन्डिपेन्डेन्स बीथ स्पेशल रेफरेन्स टू झारखण्ड'' था। इसका उद्घाटन झारखण्ड के राज्यपाल श्री सैयद सिब्ते रिज़वी द्वारा किया गया। डॉ. पी.के. शुक्ला ने माननीय राज्यपाल महोदय को 1857 युद्ध की एक तस्वीर, तीन पुस्तिका, प्रोफेसर सब्यासाची भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित पुस्तक 'रिथीन्कींग 1857' नामक पुस्तक भेट किया। प्रो. ए.ए. खान, कुलपति, राँची विश्वविद्यालय, प्रो. वासुदेव चट्टोपाध्याय और अन्य प्रसिद्ध इतिहासकारों व विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों ने 1857 के विद्रोह पर अपने पर्चे प्रस्तुत किया। डॉ. अशोक अन्शुमान, हितेन्द्र कुमार पते, एस.वी. जानी, एस. गजरानी, अता मल्लिक और हरीश के. शर्मा जैसे विद्वानों ने अपने पर्चे प्रस्तुत किया।

अक्तूबर 2007

15. आई.सी.एच.आर. के आर्थिक सहायता से सेन्टर फॉर सोसायटी एण्ड सेक्यूलिरिज़म (मुम्बई) द्वारा 17-18 अक्तूबर 2007 को ''दि फर्स्ट वार ऑफ इन्डिपेनडेन्स एण्ड नेशन बिल्डिंग इन साऊथ एशिया : इश्यूज एण्ड कर्न्सनस'' विषय पर दो दिन का अन्तराष्ट्रीय सेमिनार नई दिल्ली में आयोजित किया गया। आई.सी.एच.आर. के अध्यक्ष प्रो. सब्यासाची भट्टाचार्य ने सेमिनार का उद्घाटन किया। मुख्य वक्ता थे–प्रो. जोया हसन, प्रो. जी. हरगोपाल, प्रो. उमा सिंह, प्रो. बी. सूर्यनारायण, प्रो. पार्थ घोष, प्रो. एस.डी. मुनि और डॉ. एन. मोहन, जेड. नसरीन, परवीन नीलोफर, सी रेनफोर्ड व असगर अली इन्जीनियर थे।
16. 27-28 अक्तूबर 2007 को लखनऊ विश्वविद्यालय के मध्य एवं आधुनिक इतिहास विभाग ने आई.सी.एच.आर. के तत्वाधान में दो दिन के राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जिसका विषय ''दि रिवोल्ट ऑफ 1857 : मिथ एण्ड रियल्टी'' था। इसका उद्घाटन प्रोफेसर वासुदेव चट्टोपाध्याय थे। मुख्य वक्ताओं में प्रो. आर.पी. सिंह, प्रो. रुद्रानाशु, प्रो. सुगम आनन्द, प्रो. वी.डी. पाण्डे एवं प्रो. इकबाल हुसैन थे। श्री शबी अहमद आई.सी.एच.आर. का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।
17. आई.सी.एच.आर. के सहयोग से 30-31 अक्तूबर 2007 को दो-दिन का राष्ट्रीय सेमिनार जिसका

विषय ''यूरोपियन 'रेसपॉन्सेस टू दि 1857 रिबेलियन इन इन्डिया'' था, का आयोजन जर्मनीक और रोमॉन्स स्टडीज़ विभाग। (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने किया था। डॉ. अनिल भाटी, डॉ. फलमिनिया निकोरा, डॉ. योगेश शर्मा, डॉ. क्लऊडिया रसीचेल, डॉ. मारजीट कॉवेस, डॉ. मारजोर फ्रान्ज, डा. स्वाती दास गुप्ता, डॉ. सचित्रा चौधरी, डॉ. बालाजी रन्गानाथन, डॉ. सोवोन सान्याल, डॉ. साराह लेम्मेन, डॉ. विभा मौर्या और डॉ. मनीष तनेजा प्रमुख वक्ता रहे।

नवम्बर 2007

18. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित, इतिहास विभाग भारथीपसन विश्वविद्यालय, तिरुचीरापल्ली (तमिलनाडु) द्वारा आयोजित 1-2 नवम्बर, 2007 को दो दिन के राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया जिसका विषय अरलि रेजिसटेन्स टू कॉलोनियल रूल इन तमिलनाडु—फ्रॉम पॉलीर्गस टू 1857 था। प्रो. एस. भट्टाचार्य ने सेमिनार का उद्घाटन किया। डॉ. एम. पोन्नवैइको, (कुलपति, भाराथीदसन विश्वविद्यालय) ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता किया। मुख्य वक्ताओं में प्रो. बी. सुरेन्द्र राव, प्रो. सेबस्टीअन जोसफ, श्री सब्रामानियम रेड्डी, प्रो. शोबनन्, प्रो. मणी कुमार, प्रो. शदाशिवनए प्रो. एस. गोपालकृष्णनन, प्रो. पी. ई. मोहन, प्रो. पी. वी. गोपालकृष्णनन, प्रो. मोहन राम, प्रो. कलीमुथू तथा डॉ. जी. जे. सुधाकर, डॉ. एस. एन. नागेश्वर राव आदि थे।
19. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित मौलाना इबादत इजूकेशनल सोसायटी अमरोहा (उ.प्र.) द्वारा 4 नवम्बर 2007 को एक दिन का सेमिनार आयोजित किया गया। जिसका विषय 1857 की जगें आजादी में रोहिलखण्ड की भागीदारी था। मुख्य वक्ताओं में प्रो. एन.आर. फारूखी, प्रो. एन.आर. रीज़वी, प्रो. एस.जेड. एच. जाफरी, प्रो. ए.क्यू. जाफरी, प्रो. एम.ए. नक्वी और डॉ. रिज़वान कैसर, डॉ. फिरदौस अजमत, डॉ. शफत फाहीम, डॉ. शैम्स नकवी, डॉ. मेहताब नकवी, डॉ. एस.एच. अख्तर, श्री शबी अहमद आई.सी.एच.आर. के ओर से मेहमान थे।
20. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित, इतिहास विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ (उ.प्र.) द्वारा आयोजित दो दिन 4-5 नवम्बर 2007 को राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया जिसका विषय ''दि रिवोल्ट ऑफ 1857: नेचर एण्ड स्कोप'' था। सी.सी.एस. विश्वविद्यालय, मेरठ के कुलपति प्रोफेसर एस.पी. ओझा ने सेमिनार का उद्घाटन किया। पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री सत्यपाल मलिक ने भी सेमिनार को सम्बोधित किया। प्रोफेसर सतीश चन्द्र मित्तल, प्रो. गीता श्रीवास्तव प्रो. आर. एस. अग्रवाल, प्रो. के.के. शर्मा मुख्य वक्ता थे।
21. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित, इतिहास विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय, मिदनापुर (प. ब) द्वारा 20-21 नवम्बर 2007 को दो दिन का राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजित किया गया जिसका विषय ''दि रिवोल्ट ऑफ 1857 : रिज़नल पर्सपेक्टिवस'' था मुख्य वक्तओं में प्रो. एस.जेड.एच. जाफरी, प्रो. फरहात हसन, प्रो. वासुदेव चट्टोउपाध्याय, प्रो. राम कृष्ण चटर्जी, प्रो. हिमादरी बनर्जी, प्रो. मुरुलई और डॉ. पी.के. शुक्ला, डॉ. विश्वमॉय पति, डॉ. सयुक्ता दासगुप्ता, डॉ. राजशेखर बसु थे।
22. आई.सी.एच.आर. अनुदान के तहत प्राचीन इतिहास और सस्कृति विभाग, एम.जे.पी. रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली (उ.प्र.) द्वारा 24-25 नवम्बर, 2007 को दो दिन का एक राष्ट्रीय सेमिनार

का आयोजन किया या जिसका विषय "दि रिवॉल्ट ऑफ 1857 : पारालेल्स एण्ड सोशल हाईलाईटस" था। लगभग 20 प्रसिद्ध इतिहासकारों और विद्वानों ने इस विषय पर अपने-अपने पर्चे प्रस्तुत किये जिसमें प्रोफेसर के.सी. यादव, प्रो. ओ.पी. यादव, प्रो. एस.एन.आर. रिजवी और आई. सी.एच.आर. के शबी अहमद शामिल थे।

23. आई.सी.एच.आर. अनुदान के तहत इतिहास विभाग (मध्य इतिहास), हमीदिया गर्ल्स डिग्री कालेज, इलाहाबाद (उ.प्र.) द्वारा दो दिन का एक राष्ट्रीय सेमिनार, 25-26 नवम्बर 2007, को आयोजित किया गया। बिषय "कम्यूनल यूनिटी एण्ड इन्यिन फ्रीडम स्ट्रगल" था। 30 से अधिक पर्चे सेमिनार में प्रस्तुत किये गए जिसका मुख्य आधार स्वदेशी स्रोतों विशेषकर उर्दू और परशियन। प्रो. एस.जेड.एच. जाफरी, प्रो. जफरूल इस्लाम, एस.एन.आर. रिज़वी, प्रो. ए.क्य. जाफरी आदि मुख्य वक्ता थे। श्री शबी अहमद (आई.सी.एच.आर) को सेमिनार के समापन सत्र की अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया गया।

24. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित, पंजाब हिस्टोरीकल सोसायटी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब) द्वारा एक दिन के सेमिनार, 28 नवम्बर 2007, का आयोजन किया गया जिसका विषय "रिवोल्ट ऑफ 1857 एण्ड दि पंजाब : हिस्टोरीयोग्राफीकल पर्सपेक्टीवस" था। प्रो. सुरजीत हन्स द्वारा उद्घाटन व प्रो. दिलीप मेनन द्वारा मुख्य भाषण दिया गया। अन्य वक्ताओं के साथ अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रोफेसर नवतेज सिंह, प्रो. शम्मुल इस्लाम और एस.एस. गिल आदि थे।

25. "रोल ऑफ दि प्रोमिनेन्ट हिरोज़ इन दि रिवोल्ट ऑफ 1857 इन दि मालवा रिजन ऑफ मध्य प्रदेश" विषय पर आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित, श्री कावेरी रीसर्च इन्स्टीट्यूट, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा 2 दिन का सेमिनार, 29-30 नवम्बर 2007 को आयोजित किया गया। लगभग 20 पर्चे सेमिनार में प्रस्तुत किया गया। प्रो. सुरेश मिश्रा, प्रो. के.एल. श्रीवास्तव आदि मुख्य वक्ताओं ने सेमिनार में भाग लिया।

दिसम्बर 2007

26. आई.सी.एच.आर. अनुदान के तहत बनगिया साहित्य परिषद्, कोलकत्ता द्वारा "दि रिवोल्ट ऑफ 1857" विषय पर दो दिन का राष्ट्रीय सेमिनार, 1-2 दिसम्बर 2007, को आयोजित किया गया। प्रो. बरुनडे द्वारा नीति निर्धारक भाषण दिया गया। सेमिनार के मुख्य वक्ता थे–प्रो. अनिरुद्ध रॉय, प्रो. बासुदेव चट्टोपाध्याय, प्रो. अवजीत रे, प्रो. अतीश दासगुप्ता, प्रो. हिमान्द्री बन्धोउपाध्याय, प्रो. अलोक दास, प्रो. नरूल इस्लाम मन्जूर तथा प्रो. सव्यसाची भट्टाचार्य।

27. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित दो दिन का सेमिनार, 8-9 दिसम्बर 2007 को 1857 जगें आजादी की 150वीं वर्गगाठ के कोमेमोरेशन कमेटी, झांसी द्वारा आयोजित किया गया जिसका विषय "1857 अपराईजिंग-लेसन्स एण्ड रेलेवेन्स टू प्रेजेन्ट इन्डिया" था। सेमिनार को प्रसिद्ध इतिहासकारों प्रो. इरफान हबीब, प्रो. चमनलाल, प्रो. प्रदीप सक्सेना, डॉ. पी.के. शुक्ला, वी. प्रभाष जोशी, डॉ. अशगर वज़ाहत, डॉ. मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, डॉ. चंचल चौहान, डॉ. रामशरण जोशी आदि ने सम्बोधित किया।

28. आई.सी.एच.आर. अनुदान के तहत ''रिमेमबरीन्ग 1857'' विषय पर जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा दो दिन 13-14 दिसम्बर 2007, को अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रो. मुशिरूल हसन, कुलपति, और डॉ. रक्शन्दा जलील ने इस सम्मेलन को बेहतर तरीके से आयोजित किया। प्रसिद्ध इतिहासकारों और विद्वानों प्रो. अनरेष मिश्रा, प्रो. इरा भट्टाचार्य, शर्मिष्ठा डे, प्रो. सब्यासाची दास गुप्ता, प्रो. वीना नरेगाल, प्रो. चारु गुप्ता आदि ने अपने पर्चे प्रस्तुत किया।
29. आई.सी.एच.आर. से क्षेत्रिय केन्द्र बैंगलोर द्वारा 17 दिसम्बर 2007 को बैंगलोर में ''रेजिसटेन्स टू कालोनियल रुल इन साउथ इन्डियन टिल 1857'' विषय पर एक दिन का गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन प्रो. ओ. अजय मोहिया, कुलपति, तमकुर विश्वविद्यालय, द्वारा किया गया तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सब्यासाची भट्टाचार्य, अध्यक्ष, आई.सी.एच.आर., द्वारा किया गया। प्रो. एन. राजेन्द्रन, प्रो. सुरेन्द्र राव, प्रो. वैंकटरमन, प्रो. एस. गोपाल कृष्ण, प्रो. के. एन. मनिकुमार तथा प्रो. एस. चन्द्रशेखर ने अपने-अपने पर्चे प्रस्तुत किए।

जनवरी 2008

30. आई.सी.एच.आर. अनुदान के तहत ए.पी.सी. महालक्ष्मी महिला कॉलेज, टूटूकोरीन द्वारा ''वन हन्डरेड एण्ड फिफ्टी ईयरस ऑफ 1857 स्ट्रगल'' विषय पर 7 जनवरी 2008 को एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता–प्रो. के.एन. पणिक्कर, प्रो. के.के.एन. कूरुप, प्रो. गोपाल कृष्णनन और डॉ. चन्द्रशेखर थे।
31. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित ''राजस्थान में 1857 : एक जन आन्दोलन'' विषय पर ''शोधक'' जयपुर द्वारा दो दिन 14-15 जनवरी 2008 को एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के विषय पर 'शोधक' के डॉ. राम पाण्डेय द्वारा रोशनी डाली गई। लगभग 15 पर्चे सेमिनार में प्रस्तुत किये गये। मुख्य वक्ता प्रो. के.सी. यादव, प्रो. एस.के. पन्त, प्रो. एस. के. गुप्ता, डॉ. टी.के. माथुर, डॉ. राजपाल सिंह, डॉ. रीता प्रताप, डॉ. शिवकुमार भनोट, डॉ. आशा पाण्डेय, डॉ. अतुल मोईन खान, रेयाजुद्दीन खान आदि थे। डॉ. वाई. चिन्ना राव (आई.सी.एच.आर. के सदस्य सचिव) ने भी सेमिनार में भाग लिया।
32. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित तीन-दिन का राष्ट्रीय सम्मेलन, 16-18 जनवरी 2008, विषय ''1857 रिविजिटेड'' था जिसका इतिहास विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किया गया। सेमिनार का उद्घाटन भारत के चुनाव आयुक्त श्री एस.वाई. कुरेशी और अध्यक्षता डॉ. ए.आर. किदवई, हरियाणा के राज्यपाल, द्वारा किया गया। प्रो. जे.पी. मिश्रा, प्रो. जोगेन्द्र सिंह, प्रो. जिग़र मोहम्मद, प्रो. हिमादरी बनर्जी, प्रो. एस.एन.आर. रिज़वी, श्री शबी अहमद (आई.सी.एच. आर.), प्रो. हिमादरी बनर्जी, प्रो. के.सी. यादव, प्रो. एस.सी. मित्तल, प्रो. जाफरी और प्रो. राघवेन्द्र तवर मुख्य वक्ता थे जिन्होंने अपने-अपने पर्चे पढ़े।
33. आई.सी.एच.आर. अनुदान के तहत दो दिन का राष्ट्रीय सेमिनार 20-21 जनवरी 2008, का आयोजन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मध्य तथा आधुनिक इतिहास विभाग द्वारा किया गया,

जिसका विषय ''दि मूवमेन्ट ऑफ 1857'' था। प्रो. वी.सी. पाण्डे, प्रो. रतनेश्वर मिश्रा, प्रो. लाल बहादुर वर्मा, प्रो. इकबाल हुसैन, प्रो. सुशील श्रीवास्तव, प्रो. एस.जेड.एच. जाफरी, प्रो. एस.एन.आर. रिज़वी, प्रो. ए.ए. फातमी तथा प्रो. ओम प्रकाश ने अपने पर्चे प्रस्तुत किये।

फरवरी 2008

34. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित दो दिन का राष्ट्रीय सेमिनार, 2-3 फरवरी 2008, का आयोजन इतिहास और आर्कियोलोजी विभाग, आन्ध्रा विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। इसका विषय ''रिअपरैजल ऑफ फ्रीडम स्ट्रगल'' था। मुख्य वक्ता प्रो. आर. सोमा रेड्डी, प्रो. आलोक परासर सेन, प्रो. रामचन्द्रा मूर्ती, प्रो. एम. राधाकृष्णा शर्मा, प्रो. वाई. सुदर्शन राव, प्रो. डी. भास्कर मूर्ती, प्रो. एस. राजशेखर और डाक्टर पी.एन. परब्रह्मा शास्त्री, आदि थे
35. ''दि रिवोल्ट ऑफ 1857 इन सेन्ट्रल इन्डिया'' विषय पर आई.सी.एच.आर. के अनुदान से रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) द्वारा तीन दिन का राष्ट्रीय सेमिनार, 2-4 फरवरी 2008, का आयोजन किया गया। सेमिनार का उद्घाटन प्रो. नामवरसिंह, कुलपति, महात्मा गांधी अन्तराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, द्वारा किया गया। लगभग 40 विद्वानों ने अपने पर्चे प्रस्तुत किये जिसमें प्रो. नामवर सिंह प्रो. राजीव दुबे, प्रो. उमा त्रिपाठी, प्रो. एम.ए.खान, प्रो. जे.पी. मिश्रा तथा डॉ. अलीम अलाम खान, डॉ. प्रदीप शुक्ला, डॉ. ओ.पी. शर्मा, डॉ. ए. गंगाधरन आदि थे।
36. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित, ''देहली एण्ड इटस नेबरहूड'' विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय के माता सुन्दरी महिला कॉलेज द्वारा एक दिन का राष्ट्रीय सेमिनार, 12 फरवरी 2008, का आयोजन किया गया, सेमिनार का उद्घाटन आई.सी.एच.आर. के अध्यक्ष प्रो. सब्यासाची भट्टाचार्य द्वारा हुआ। प्रो. इरफान हबीब द्वारा नीति निर्धारक भाषण दिया गया। अन्य प्रमुख विद्वानों में प्रो. सुरजभान, प्रो. शिरीन मूसवी, प्रो. यू.पी. अरोडा, प्रो. एस.जेड.एच. जाफरी, प्रो. एस. पाण्डेय और प्रो. अमर फारूखी थे। कई प्रमुख इतिहासकारों और विद्वानों ने सेमिनार में भाग लिया जैसे प्रो. के.एम. श्रीमाली, प्रो. वी.पी. साहु तथा डॉ. रत्नाश्री, डॉ. पी.के. शुक्ला और श्री शबी अहमद।
37. आई.सी.एच.आर. अनुदान के तहत पुरातत्त्व, अभिलेखागार और सग्रहालय, भोपाल, के आयुक्त द्वारा दो-दिन का राष्ट्रीय सेमिनार, 16-17 फरवरी 2008 को आयोजित किया जिसका विषय ''दि फर्स्ट वार ऑफ इन डिपेन्डेन्स आफ 1857'' था। डॉ. अरुण अवस्थी, डॉ. ममता चीनसोरिया, डॉ. महबूब देसाई, डॉ. हक, डॉ. जे.पी. मिश्रा, डॉ. आर. मिश्रा, डॉ अरुण पाठक, डॉ. मीरा राय, डॉ. अनीता सिंह, प्रो. रेवेन्द्र चौबे, डॉ. जाकीर हुसैन आदि सेमिनार के मुख्य वक्ता थे।
38. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित तीन दिन का एक विचार-गोष्ठी 24-26 फरवरी 2008, जिसका विषय ''सोर्स एण्ड दियर नेचर ऑन 1857 ईन मध्यप्रदेश एण्ड राजस्थान'' था जिसकी आयोजन श्री संतनगर शोध संस्थान, सीतामऊ (म. प्र.) द्वारा किया गया। मुख्य वक्ताओं में डॉ. एस.के. पुरोहित, डॉ. एस.पी. ब्यास, डॉ. शंकर गोयल, डॉ. एस.एस. बैस, डॉ. रविन्द्र भारद्वाज, डॉ. पमराम, डॉ. अगनेस ठाकुर, डॉ. आर.एन. श्रीवास्तव, डॉ. प्रदीप शुक्ला, डॉ. आभा पटेल आदि थे।
39. आई.सी.एच.आर. के अनुदान तहत ''अन्डमान एण्ड निकोबार 1857'' विषय पर अन्डमान और निकोबार प्रशासन द्वारा पोर्ट ब्लेयर में 26-27 दिसम्बर को दो दिन का एक राष्ट्रीय सेमिनार का

आयोजन किया गया। सेमिनार का उद्‌घाटन ले. जनरल (अवकाश प्राप्त) भूपिन्द्र सिंह, उप राज्यपाल-अन्डमान और निकोबार, द्वारा किया गया। डॉ. पी. के. शुक्ला ने आई.सी.एच.आर. की और से प्रतिनिधित्व किया। प्रो. एन. राजेन्द्रन, श्री. एम.ए. मुजतबा, जी.एस. पाण्डेय, एम.ए. सलीम, एम.एम. सिंह आदि ने अन्य प्रसिद्ध विद्वानों के साथ अपने पर्चे प्रस्तुत किया और सेमिनार के विषय पर चर्चा किया।

40. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित, कल्याणी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा आयोजित, दो दिन का राष्ट्रीय सेमिनार, 26-27 फरवरी 2008, जिसका विषय ''रिविजिटिन्ग 1857 : सिग्नीफिकेन्स एण्ड रेलेवन्स'' था। सेमिनार का उद्‌घाटन प्रो. अरविन्द कुमार दास तथा नीति निर्धारण भाषण प्रो. बासुदेव चट्टोउपाध्याय द्वारा दिया गया। सेमिनार के मुख्य वक्ता प्रो. हिमादरी बनर्जी, प्रो. अतुलचन्द्र प्रधान, प्रो. चन्दा चटर्जी तथा डॉ. सुकुमार सरकार, डॉ. कौशिक रॉय, डॉ. सब्यासाची दासगुप्ता इत्यादि थे।

मार्च 2008

41. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित दो दिन का राष्ट्रीय सेमिनार, 18-19 मार्च 2008, इतिहास, पुरातत्त्व एवं सस्कृति विभाग, द्रावाडीयन विश्वविद्यालय, कूप्पम, (ए.पी.) द्वारा आयोजित किया गया, जिकसा विषय ''राईजिन्ग ऑफ 1857 : एण्ड लिटरेरी, फोल्कलोर अदर कल्चरल रिपरजेन्टेशन्स ऑफ साऊथ इन्डिया'' था। लगभग 15 विद्वानों व प्रसिद्ध इतिहासकारों ने जिसमें प्रो. एन. राजेन्द्रन, प्रो. एस. गोपाल कृष्ण, प्रो. पी. यानाड़ी राजु आदि ने अपने पर्चे प्रस्तुत किया।
42. आई.सी.एच.आर. अनुदान के तहत आर्य कन्या महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा द्वारा, ''इन्डिया इन 1857'' विषय पर एक दिन का राष्ट्रीय सेमिनार, 29 मार्च 2008, का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता प्रो. सुरजभान, प्रो. के.एल. टूटेजा, प्रो. एस.डी. गजरानी थे जिन्होंने 1857 के विद्रोह में कुरुक्षेत्र की भागीदारी को विस्तृत तरीके से प्रस्तुत किया।
43. आई.सी.एच.आर. के वित्तीय सहायता से 21-22 मार्च को दो दिन के राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन पांडीचेरी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा ''1857 इन इंडियन हिस्ट्री : हिस्टोरियोग्राफी एण्ड मेमोरी'' विषय पर पांडीचेरी में किया गया। 14 प्रसिद्ध इतिहाकारों तथा विद्वानों को इस विषय पर पर्चे प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया, जैसे प्रो. हन्जल, प्रो. मीना भार्गव, प्रो. सुब्रमनियम रेड्डी, प्रो. ए. सत्यनारायणनन, प्रो. श्रीनाथ, प्रो. जेड. ताहिर, प्रो. मनिकुमार आदि।
44. आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रायोजित दो दिन के एक राष्ट्रीय सेमिनार 29-30 मार्च 2008, जिसका विषय ''रिज़नल हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरियोग्राफी ऑफ 1857'' था, जिसे हस्तिनापुर शोध संसाधन, मेरठ (उ.प्र.) द्वारा आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता प्रो. ए.एक. सिन्हा, प्रो. एस.के. मित्तल, प्रो. जे.के. शर्मा तथा अन्य डॉ. पी.के. शुक्ता ने 1857 पर इतिहासिक लेखों और श्री आशफाक अली ने विद्रोहियों के प्रत्यक्षज्ञानों, जो उर्दू और परशियन दास्तावेजों में दर्शता है, की जाँच पड़ताल अपने-अपने पर्चों में की ।

(ख) शोध परियोजना/पुस्तक/पुरस्कार

1. आई.सी.एच.आर. द्वारा एक शोध परियोजना जो ''दि ट्रायल ऑफ बहादुरशाह'' विषय पर प्रो. के.सी. यादव (गुडगांव) को अनुबन्धित किया गया। इस परियोजना का मुख्य ध्येय बहादुर शाह की जाँच की सम्पूर्ण कानूनी कार्रवाई को उपलब्ध करना जो स्पष्ट इतिहासिक दृष्टिकोण से जाँच और उसकी जटिलताओं को समझे तथा आवश्यक सूचना दे व उससे सम्बधित व्यक्तियों की व्याख्यात्मक तथा बहादुर शाह की जाँच से जुड़े तथ्य का गठन जो 1857 के विद्रोह से जुड़ी पहेलियों को सुलझायेगा।
2. आई.सी.एच.आर. अनुदान के तहत एक शोध परियोजना प्रो. शासवती मजुमदार, जरमनिक व रोमान्स स्टडीज (दिल्ली विश्वविद्यालय) को अनुबन्धित किया गया जिसका विषय ''यूरोप रेपोन्सेस टू दि 1857 रेबेलियन इन इन्डिया'' था, इस परियोजना का मुख्य पहलू इस विषय से जुडी अग्रेजी रहीत यूरोपियन भाषाओं और उनका अंग्रेजी में रोचक चित्रों सामग्रीयों के साथ से प्रासंगिक जानकारी का संग्रह करना होगा। इन सामग्रीयों में साहित्यिक मूलों, इतिहासिक दस्तावेजों, समीक्षाओ, समाचार में सवादों आदि सम्मलित किया जाएगा। यह परियोजना उन्नति पर है बहुत सारी सामग्रीयों को एकत्रित किया गया है और उनक रूपान्तरण आरम्भ हो गया हैं।
3. आई.सी.एच.आर. अनुदान के तहत प्रो. सुरन्जनदास, नेताजी इनस्टिटयूट फॉर एशियन स्टडीज, कोलकत्ता, (पं. बंगाल) के साथ ''दि कॉनटेम्पॉरेरी पब्लिशड एण्ड अनपब्लिशड सोर्स। डाक्यूमेन्टस ऑन 1857 इन बंगाली लैंगवेज'' विषय पर अनुबन्ध हुआ।
4. आई.सी.एच.आर. ग्रान्ट-ईन-एड् योजना के तहत एक परियोजना ''सेलेक्ट एण्ड कॉम्पाईल दि सोर्स मैटेरियल्स रिलेटिन्ग टू 1857 फ्रॉम दि स्टेट ऑरकाइब्ज ऑफ बंगाल'' प्रो. बासुदेव चट्टोपाध्याय, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकत्ता को प्रदान किया गया।
5. आई.सी.एच.आर. ग्रान्ट-ईन-एड् योजना के तहत ''आदाब साज-1857'' उर्दू भाषा में (डॉ. नुसरत जहीर द्वारा सम्पादित) को प्रकाशन के लिए आर्थिक सहायता दिया गया। इसका प्रकाशन डॉ. जाकीर हुसैन स्टडी सर्कल, नई दिल्ली द्वारा किया गया।
6. परिषद प्रो. इकबाल हुसैन (अलीगढ़) के साथ 1857 की परियोजना के रूपान्तरण व विद्रोहियों की विभिन्न उद्घोषणाओं के सम्पादन में व्यवस्थ रहा। उन्होंने परिषद् को इस परियोजना ''प्रोक्लेमेसन्स ऑफ दि रेवेल्स ऑफ 1857'' का एक प्रारूप प्रो. इरफान हबीब द्वारा संशोधन और उर्द्धतन किया गया, के लिए पेश किया। परिषद् के द्वारा ''1857 की उद्घोषणा'' को उर्दू और हिन्दी मे भी प्रकाशन करने का फैसला किया।
7. 1857 पर भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली से बड़ी संख्या में उर्दू और परशियन दस्तावेजों को आई.सी.एच.आर. में संचित किया गया जो अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषाओं में प्रकाशन के लिये सम्पादित व संग्रहित किया गया।
8. समकालीन उर्दू समाजपत्रों से उद्धरणों के लेकर हिन्दी व उर्दू भाषा में जैसे तिलिस्म-ई-लखनऊ, दिल्ली उर्दू अख़बार तथा आफताब-ई-अलामताब इसके लिये प्रोफेसर शीरीन मूसवी और डॉ. इम्तियाज अहमद (पटना) को नियत किया।

9. उपलब्ध समकालीन मराठी भाषा से प्रोफेसर जे.वी. नायक, मुम्बई के देखरेख में उद्धरणों को संग्रहीत किया गया जो पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जायेगा।
10. आई.सी.एच.आर. द्वारा पूर्व तैयार ''1857 : ए सेलेक्ट बिब्लियोग्राफी'' को कई आरम्भिक और द्वितय स्रोतों का समावेश कर उसका विस्तार किया जायेगा।
11. आई.सी.एच.आर. ने उस उत्तम अप्रकाशित पान्डुलिपि जो 1857 के लोकप्रिय इतिहास पर होगी तथा परिषद को पेश की जाएगी, को 50000 रु. (मात्र पचास हजार रुपये) का नकद ईनाम देने की घोषणा की।

(ग) प्रदर्शनी/एलबम/सी.डी.

इस योजना के तहत आई.सी.एच.आर. ने 127 चित्रों की प्रदर्शनी का गठन किया और देश के विभिन्न स्थानों पर इसका आयोजन किया।

1. आई.आई.सी. के सहयोग से आई.सी.एच.आर. ने 1857 पर पाँच दिन की प्रदर्शनी इन्डिया इन्टरनेनशनल सेन्टर, नई दिल्ली के मुख्य आर्ट गैलरी में आयोजित किया। इसका उद्घाटन प्रो. इरफान हबीब द्वारा किया गया। उन्होंने एक 1857 पर चित्रों और प्रतिबिम्बों से समावेशित सूची पत्र जिसका नाम ''रिप्रजेन्टेशनस ऑफ 1857 : रिकवरिन्ग दि इन्डियन वॉईस'' का भी लोकार्पण किया जिसे आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रकाशित किया गया। 1857 के विद्रोह पर लगभग 127 प्रतिबिम्बों का प्रदर्शन और दस्तावेजों जो अभिलेखित मूलपाठों तथा समकालीन सचित्र सामग्री का संकलन, फोटोखिचना और आई.सी.एच.आर. द्वारा प्रकाशित किया गया। इस प्रर्दशनी के उद्घाटन से पूर्व 1857 पर 2 मई 2007 को हुई विचार गोष्ठी में मानव संसाधन विकास मंत्री भारत सरकार श्री अर्जुन सिंह मुख्य अतिथि थे।
2. प्रदर्शनी बहुत अधिक लोकप्रिय हुई तथा विभिन्न संस्थाओं और सगठनों ने अपने-अपने संस्थानों में प्रदर्शनी को प्रदर्शित करने की इच्छा व्यक्त किया। सास्कृतिक मन्त्रालय, भारत सरकार के अनुरोध पर 9-11 मई 2007 तक आई.सी.एच.आर. दल ने लाल किला (दिल्ली) में आजादी की पहली जंग की 150वीं वर्ष गांठ पर शाम को प्रदर्शनी को प्रदर्शित किया।
3. नेहरू मेमोरियल म्यूजियम और पुस्तकालय, तीन मूर्ति, नई दिल्ली के निदेशक प्रो. मृदुला मुखर्जी के मेजबानी करने के अनुरोध पर आई.सी.एच.आर. ने उनके प्रांगण में 10 जुलाई से 5 अगस्त, 2007 तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन प्रो. बिपिन चन्द्रा ने किया। बडी सख्या में लोगों ने यहां का भ्रमण किया। सभी आने वालों को प्रदर्शनी सूची पत्र बांटा गया।
4. हरियाणा सरकार के अनुरोध पर प्रदेश के विभिन्न भागों में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, आई.सी.एच.आर. ने हरियाणा सरकार के सहयोग से प्रदेश के 4 स्थानों–रोहतक (23-26 अगस्त 2007) रेवाडी (29 अगस्त–1 सितम्बर 2007), हिसार 4-7 सितम्बर 2007, कुरूक्षेत्र (9-14 सितम्बर 2007), पर आयोजित किया गया। सभी स्थानों पर विद्यार्थियों, अध्यपकों, अधिकारियों, राजनितिज्ञों, पत्रकारों तथा सामान्य जनमानस द्वारा सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। चित्रों और प्रतिबिम्बों की सूची को हिन्दी भाषा में दर्शकों में बाटा गया।
5. खुदा बक्श ओरियन्टल पब्लिक लाईब्रेरी (पटना) तथा पटना विश्वविद्यालय के सहयोग से आई.

सी.एच.आर. ने वीलर सीनेट हाऊस, पटना में 8-15 सितम्बर 2007 तक प्रदर्शनी का आयोजन किया। इसका उद्‌घाटन बिहार प्रदेश के मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री बृषन पटेल द्वारा किया गया। प्रदर्शनी ने बड़ी संख्या में विशेषकर विद्यार्थियों व पुलिस कर्मियों को आकर्षित किया तथा लगभग सभी से सकारात्मक टिप्पणियाँ पाया। चित्रों तथा प्रतिबिम्बों की हिन्दी तथा अंग्रेजी सूची को दर्शकों के बीच बाटा गया।

6. नेहरू केन्द्र, मुम्बई के अनुरोध पर 15 अक्तूबर से 4 नवम्बर 2007 तक प्रदर्शनी का आई.सी. एच.आर. द्वारा आयोजन किया गया। इसका उद्‌घाटन प्रो. मरीयम डोस्साल द्वारा किया गया तथा श्रोतागणों को नेहरू केन्द्र के सचिव श्री सतीश सहाय तथा श्री शबी अहमद (आई.सी.एच.आर.) द्वारा सम्बोधित किया गया प्रदर्शनी के सारे समय बड़ी संख्या में विद्यार्थियों, अध्यापकों, समाज के कई वर्गों व जनसंचार (मीडिया) के लोगों ने निरीक्षण किया।
7. आई.सी.एच.आर. ने सांस्कृतिक मन्त्रालय को प्रदर्शनी ''आजादी एवश्रेष्ठ'' के लिए 1857 पर प्रदर्शनी की सी.डी. तैयार किया, इसे (आजादी एक्प्रेस को) आदरणीय मन्त्री श्री अर्जुनसिंह ने 2 अक्तूबर 2007 को झडी दिखाया। परिषद् ने अवध की बेगम हजरत महल की उद्‌घोषणा की एक प्रति भी उपलब्ध कराया जो उर्दू व हिन्दी भाषा में था और ''विद्रोहीयों के गठन'' का उर्दू दस्तावेज अंग्रेजी में रूपान्तरण के साथ प्रदर्शनी में सम्मिलित किया गया।
8. आई.सी.एच.आर. द्वारा उपलब्ध संदर्भ के लिये अलबम तैयार किया। 1857 के प्रदर्शनी की सूची पत्र के अनुसार सभी चित्रों, मूलपाठों व अभिलेख दस्तावेजों को सभी शीर्षकों व अंतवस्तुओं के संदर्भो को साथ क्रमबद्ध किया गया है। इसलिए आई.सी.एच.आर. ने सभी प्रदर्शनियों (चित्रों का दस्तावेजों) का सभी आवश्यक संदर्भो के साथ सी.डी. तैयार किया है।
9. आई.सी.एच.आर. ने दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र, बंगलूर के साथ 15-31 दिसम्बर 2007 से बंगलूर में 1857 पर प्रदर्शनी का आयोजन किया। इसका उद्‌घाटन बैगलोर के प्रो. एस. चन्द्रशेखर द्वारा किया गया। क्षेत्रिय केन्द्र ने कन्नड भाषा में अनुवाद कराया जिसे अंग्रेजी के सूची पत्रों के साथ प्रदर्शनी में दर्शकों को दिया गया।
10. दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से आई.सी.एच.आर. द्वारा इन्डियन हिस्ट्री कांग्रेस के 68वे सत्र (28-30 दिसम्बर 2007) 28 दिसम्बर 2007 से 4 जनवरी 2008 आर्ट फैक्लटी बिल्डिंग (दिल्ली विश्वविद्यालय) में 1857 पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इन्डियन हिस्ट्री कांग्रेस के हजारों प्रतिनिधियों, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, आम जनता आदि ने प्रदर्शनी का भ्रमण किया। सभी दर्शकों को प्रदर्शनी की सूची पत्र बाटा गया।
11. विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कोलकत्ता के सहयोग से आई.सी.एच.आर. ने 21 जनवरी से 4 फरवरी 2008 को 1857 पर प्रदर्शनी का आयोजन किया। इसका उद्‌घाटन पश्चिम बंगाल के आदरणीय राज्यपाल श्री गोपाल कृष्ण गांधी द्वारा किया गया। उद्‌घाटन समारोह के अवसर पर प्रो. सब्यसाची भट्टाचार्य ने प्रदर्शनी के विषय का परिचय कराया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में विद्यार्थीयों अध्यापकों, सामान्य जनता व पत्रकारों ने प्रदर्शनी को देखा। अंग्रेजी में सूची पत्रों को दर्शकों में बांटा गया। इस अवसर पर ''1857 अपराईजिन्ग'' विषय पर 25 जनवरी 2008 को एक विचार-गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। मुख्य वक्ताओं में प्रोफेसर सब्यसाची भट्टाचार्य,

प्रो. शिरीन मूसवी, प्रो. एन. राजेन्द्रन आदि शामिल थे।

12. जवाहर कला केन्द्र के सहयोग से आई.सी.एच.आर. ने 1857 पर प्रदर्शनी का 1-10 फरवरी 2008 तक आयोजन किया। बड़ी संख्या में, विद्यार्थीयों, अध्यापकों, सामान्य व्यक्तियों व पत्रकारों ने पूरे समय प्रदर्शनी को देखा। सभी दर्शकों को हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में प्रदर्शनी की सूची बांटी गई।
13. गोवा के राज्य म्यूजियम, पानाजी के सहयोग से 1857 पर आई.सी.एच.आर. ने एक प्रदर्शनी का आयोजन 19-29 फरवरी 2008 को किया गया, गोवा के आदरणीय मुख्यमंत्री श्री दिगम्बर कॉमथ ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। बहुत सारी उच्च पदस्थ लोगों ने उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लिया। अंग्रेजी में सूची पत्र को सभी दर्शकों को दिया गया।
14. इतिहास विभाग, कल्याणी विश्वविद्यालय (प. बगाल) के सहयोग से 1857 पर प्रदर्शनी का आयोजन आई.सी.एच.आर ने बरह्मपुर में 26-28 फरवरी 2008 को किया। इसका उद्घाटन कल्याणी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविन्द कुमार दास द्वारा किया गया। दर्शकों से अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।
15. उत्तर-पूर्व क्षेत्रिय सेन्टर, गोवहाटी के साथ मिल कर आई.सी.एच.आर. ने 1857 पर एक प्रदर्शनी का आयोजन 5-16 मार्च 2008 को किया। 6 महत्त्वपूर्ण प्रांसगिकता वाले दस्तावेजों को भी प्रदर्शनी में शामिल किया गया जिनसे उत्तर-पूर्व क्षेत्रों में 1857 के विद्रोहियों के बारे में महत्त्वपूर्ण सूचना प्राप्त होती है। प्रदर्शनी सूची पत्र को सभी दर्शकों में बांटा गया।

खण्ड *VII*

भा.इ.अ.प. द्वारा आयोजित गोष्ठियां और परिसंवाद

2007-2008

आई सी एच आर गोष्ठियां और परिसंवाद
2007-2008

रिपोर्ट की अवधि के दौरान भा.इ.अ.प. ने निम्नलिखित गोष्ठियों तथा परिसंवाद का आयोजन किया :

1. 2 मई 2007 को दी आपराईजिंग ऑफ 1857 विषय पर आई.सी.एच.आर. ने एक विचार-गोष्ठी का इन्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर (आई.आई.सी.), नई दिल्ली में आयोजित किया। इसका उद्घाटन मानव संसाधन विकास मन्त्री, श्री अर्जुन सिंह ने किया, गोष्ठी को विशिष्ट इतिहासकारों तथा बुद्धिजीवियों, अन्य महत्त्वशाली प्रो. सतीशचन्द्रा, प्रो. एम.एल शर्मा, वाईस-चैयरमैन, यू.जी.सी., प्रो. डी.एन. झा, प्रो. के.एम. श्रीमाली, प्रो. अर्जुन देव, प्रो. आर.एल. शुक्ला, प्रो. मृदुला मुखर्जी तथा प्रो. ए.के. गुप्ता ने सम्बोधित किया। प्रो. इरफान हबीब, प्रो. वासुदेव चट्टोउपाध्य व प्रो. एन. राजेन्द्रन जैसे वक्ताओं ने भाषण दिया। आई.सी.एच.आर. द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन प्रो. इरफान हबीब ने किया। विशिष्ठ इतिहासकारों तथा मीडिया द्वारा गोष्ठी में भाग लिया गया।
2. 15 से 18 मई 2007 को नार्थ-इस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, (नेहू) शिलांग द्वारा ''आईडेन्टरी, इमोशन एण्ड कल्चर : लैंग्वेजे़ज़ एण्ड लिटरेचर ऑफ दि सब-कॉनटिनेन्ट : सी. 900-सी. 2000'' विषय पर चार दिन का अन्तराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। पूर्व कुलपति, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, प्रो. ए.सी. भगवती, जो मुख्य अतिथि थे, ने सेमिनार का उद्घाटन किया तथा प्रो. रजत कान्त रे, विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलपति व भा.इ.अ.प. के सदस्य द्वारा निति निर्धारक भाषण दिया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता 'नेहू' के कुलपति प्रो. प्रमोद टण्डन द्वारा किया गया। प्रो. डेविड आर. सिएमलिएह ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। सेमिनार में 23 पर्चे प्रस्तुत किए गए और 120 भागीदारों की उपस्थिति रही।
3. 27-29 सितम्बर 2007 को ''भगतसिंह एण्ड हिज टाईम्स'' विषय पर तीन दिन का अन्तराष्ट्रीय सेमिनार का इंस्टीट्यूट ऑफ पंजाब स्टडीज, चण्डीगढ़ के संयोजन से आयोजित किया गया। सेमिनार का उद्घाटन प्रो. कुलदीप नैय्यर ने किया। इन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में भगतसिंह के सिद्धान्तों का जो प्रतिकार के भावनात्मक दमन को प्रेरित करता है। यह सिर्फ विरोध नहीं था, उनके लिए क्रान्ति अवज्ञा का एक रूप था, न की हिंसा। भगत सिंह का न्यायालय परीक्षण तथा फाँसी के दौरान गांधी की भूमिका पर प्रो. वी.एन. दत्ता की विश्लेषणात्मक परिचर्चा थी। प्रो. जे.एस. ग्रेवाल ने कहा कि भगत सिंह के समकालीन सभी क्रान्तिकारियों में से सम्भवत: तर्कसंगत आधार व क्रान्तिकारी के निहितार्थ एक सामाजिक संरचना का ही अर्थ है।

   इस अवसर पर इतिहासकारों तथा विद्वानों-प्रो. अशोक एस. चौउसलकर, प्रो. हिमादि बनर्जी, प्रो. चमनलाल, प्रो. शशी जोशी, प्रो. हरीश कुमार पुरी, प्रो. जगमोहन सिंह, प्रो. के. एल. टुटेजा,

प्रो. हरीश सी. शर्मा, प्रो. एच.एस. मेहता तथा प्रो. तेजवन्त सिंह गिल ने भाग लिया। इसमें चर्चा किया गया कि कैसे रुमानी आदर्शवादी क्रान्तिकारी कार्य जिसका आधार वैज्ञानिक समाजवाद होता है। चर्चा के अन्य पहलू में भगतसिंह की विचारधारा का विकास, गदर क्रान्ति, मार्क्सवाद तथा समाजवाद पर प्रभाव व इनका युवा क्रान्तिकारी सन्त के रूप में उदय होना जो किसानों व मजदूरों का आकर्षित करता है, रहा। भगतसिंह की पुस्तक 'वाई आई एम एन ऐथिइस्ट' पर मुख्य चर्चा रही।

4. 4 से 7 जनवरी 2008 को एस.आर.सी., बैंगलोर में एक अन्तराष्ट्रीय सेमिनार का "आईडेन्टेटी, इमोशन एण्ड कल्चर : लंग्वेजेज एण्ड लिटेरेचर ऑफ दि सब-कॉनटिनेन्ट, सी. 900 टू 1971" विषय पर आयोजन किया गया। विश्वाभारती के कुलपति प्रोफेसर रजतकन्ता रे तथा सेमिनार निदेशक ने नितिनिर्धारक भाषण दिया। सेमिनार का उद्घाटन प्रो. यू.आर. अन्नथमूर्ती (ज्ञानपीठ विजेता) द्वारा तथा प्रो. सुगता बोस, हारवार्ड विश्वविद्यालय (कैम्बरीज़) मुख्य अतिथि थे।

    इस विषय पर भारत तथा विदेशों से आये विद्वानों ने अपने पर्चे परस्तुत किया। प्रो. एस. सत्तार (धारवाड): डॉ. चित्रलेखा जुत्शी (विलिमबर्ग): डॉ. जानकी नायर (कोलकत्ता); प्रो. एस. चन्द्रशेखर (बैंगलोर); प्रो. एन. राजेन्द्रन (तिरुचीरापल्ली); प्रो. बी. सुरेन्द्र राव (मैंगलोर), प्रो. विजया रामास्वामी (नई दिल्ली); और प्रो. केशव वेलूथार (मैंगलोर) इस सेमिनार में भागीदार थे।

खण्ड *VIII*

आयोजित विशेष व्याख्यान/वार्ताएं का आयोजन

2007-2008

आयोजित विशेष व्याख्यान/वार्ताएं
2007-2008

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद ने अपने स्वीकार ध्येय, विस्तृत भण्डार, मदद करना तथा अकादमीक क्रियाकलापों को बढ़ाने के अंतर्गत रिपोर्ट की अवधि के दौरान व्याख्यानों व एक पुस्तक परिचर्चा को व्याख्यान श्रृंखला कार्यक्रम के तहत परिषद् के परांगण में आयोजित किया गया। इसका विवरण निम्नलिखित हैं :

1. "'नेबरहूड टरीकिया' एण्ड 'कॉफी पार्टीज' हेटरेड एण्ड मेलिस इन दि नाजी रीज़िम" डॉ. वन्दना जोशी द्वारा, इतिहास विभाग, श्री वेनकटेश्वरा कॉलेज नई दिल्ली, 26 अप्रैल 2007

2. डॉ. एस. इरफान हबीब द्वारा नीसटैडस, नई दिल्ली में, "भगतसिंह : रेडिकल पॉलिटिक्स एण्ड सोशलिस्ट विज़न" विषय पर, 31 अगस्त 2007

3. प्रो. दीपक कुमार, जाकीर हुसैन सेन्टर फॉर एजुकेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, द्वारा "'न्यू' नॉलेज एण्ड 'न्यू' विज़न : लेसन्स फ्रांम दि कॉलोनियल पास्ट" विषय पर 28 सितम्बर 2007 को व्याख्यान दिया गया।

4. डॉ. रजीउद्दीन अकूईल, इतिहास के अध्येता (फेलो), सेन्टर फॉर स्टडीज़ इन सोशल साईन्सेस, कोलकत्ता, द्वारा 26 अक्तूबर 2007 को व्याख्यान दिया गया।

5. ए.के. बागची व गैरी ए. दयमसकी (सम्पादक) द्वारा "कैपचर एण्ड एक्सक्लूड : डेवेलॉपिन्ग इकोनोमिज़ एण्ड दि पुअर इन ग्लोबल फिनान्स" पुस्तक पर 29 अक्तूबर 2007 को परिचर्चा हुई। प्रो. सुरजीत मजुमदार इन्ट्रीटयूर फॉर स्टडीज इन इन्डसट्रियल डवलपमेन्ट (आई.एच.आई.डी. नई दिल्ली), डॉ. अतुलक गुहा (आई.एस.आई.डी., नई दिल्ली) और प्रसन्नजीत बोस (नई दिल्ली), ने परिचर्चा में भाग लिया। प्रो. ए.के. बागची ने परिचर्चा में भागीदारों द्वारा उठाये प्रश्नों का विस्तृत और विस्तार में उत्तर दिया।

6. डॉ. अरविन्द सिंहा, सेन्टर फॉर हिस्टोरिकल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा 30 नवम्बर 2007 को "यूरोपिन बैंकरस, लोकल मरचेन्ट्स एण्ड दि इन्डो-फ्रेन्च ट्रेड फ्रॉम 1760ज" विषय पर व्याख्यान हुआ।

7. डॉ. परिमला वी.राव, सीनियर रीसर्च एसोशियेट, सेन्टर फॉर विमेनस डवलपमेन्ट स्टडीज, नई दिल्ली, द्वारा 15 फरवरी 2008 को "इनवेनटीन्ग दि अनेमी : रीलिजियस आई डेन्टेटी एण्ड पॉलिटिक्स इन दि राईटिन्गस ऑफ बाल गंगाधर तिलक" विषय पर व्याख्यान हुआ।

8. डॉच नन्दिनी पाण्डे (कोलकत्ता) आई.सी.एच.आर. का एक सीनियर अकादमिक फेलो, द्वारा 18 मार्च 2008 को "हिन्दू ला एण्ड दि इनवेनसन ऑफ ट्रेडीशन" विषय पर व्याख्यान हुआ।

खण्ड *IX*

पुस्तकालय-सह-प्रलेखन केन्द्र

2007-2008

पुस्तकालय-सह-प्रलेखन केन्द्र
2007-2008

आई.सी.एच.आर. के पुस्तकालय-सह प्रलेखन केंद्र में इतिहास और संबद्ध विषयों पर पुस्तकें हैं। वर्षो से इस पुस्तकालय का विकास निष्पक्षतापूर्वक बहुश्रिति-संदर्भ पुस्तकालयों के रूप में हुआ है। पुस्तकालय में लगभग 67500 पुस्तकों/पत्रिकाओं और लगभग 110 विदेशी और भारतीय पत्रिकाएं/मैगजीन के लिए चंदा (सब्सक्रीप्शन) जारी है।

पुस्तकालय ने नवीनतम प्रकाशित 816 पुस्तकें खरीदीं, जो भारतीय इतिहास और सम्बद्ध विषयों से संबंधित थीं, जिनमें संदर्भ पुस्तकें तथा एशिया व निकटवर्ती देशों के इतिहास से संबंधित पुस्तकें भी सम्मिलित थीं।

पुस्तकालय ने अध्ययनकर्ताओं के लिए अध्ययन संदर्भ और परामर्श सेवाओं को बढ़ाया है। विभिन्न विश्वविद्यालयों/ संस्थानों के छात्रों/ अध्येता समूहों ने ऐतिहासिक अनुसंधान के विभिन्न विषयों में अपना अध्ययन जारी रखने के लिए इस वर्ष आई.सी.एच.आर. पुस्तकालय के लगभग 2400 अवलोकन किया।

पुस्तकालय भ्रमण करने वाले विद्वानों। विद्यार्थियों के लिये पुस्तकालय ''रेपरोग्राफिक'' सेवा उपलब्ध कराता है। इस आलोच्च अवधि के दौरान लगभग 31,317 प्रथम प्रस्तुति को अध्येताओं तथा विद्वानों के लिये एक सामान्य मूल्य 50 पैसे प्रति पृष्ठ पर उपलब्ध कराया गया।

पुस्तकालय-सह-प्रलेख केन्द्र 'डेलनेट' (देहली लाईब्रेरी नेटवर्कींग) का सदस्य है। डी.एस.टी.ओ. आर. की प्राप्त सदस्यता के कारण, पुस्तकालय की पहुँच खरीद न पाने वाले पत्रिकाओं साथ ही साथ दुर्लभ तथा इतिहासिक पत्रिकाओं की पुरानी प्रतियां भी उपलब्ध है। परिषद के पुस्तकालय का अध्ययन कक्ष 9:30 प्रात: से 5:30 साय काल तक सभी दिनों में, रविवार तथा अन्य सरकारी छुट्टियों को छोड़कर खुला रहता है। पुस्तकालय में सुधार के लिए सभी विद्वानों के सुझावों का स्वागत है।

खण्ड ***X***

भा.इ.अ.प. क्षेत्रीय केन्द्रों के कार्यकलाप 2007-2008

भा.इ.अ.प. क्षेत्रीय केन्द्रों के कार्यकलाप

2007-2008

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद ने अपने कार्यकलापों को देश के दूर-दराज़ वाले क्षेत्रों में पहुंचाने के लिए, दो क्षेत्रिय केन्द्रों की स्थापना की जिनमें से एक बैगलूर में और दूसरा गोवहाटी में है। दोनों केन्द्रों का मुख्य लक्ष्य सक्रिय विद्वानों को उनके शोध में मदद करने के लिए उच्च कोटि का पुस्तकाय संसाधन उपलब्ध कराना व क्षेत्रिय तथा राज्य स्तर पर सेमिनारों का आयोजन करना है दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र (एस. आर.सी.), बैंगलूर के सह-निदेशक (शोध) डॉ. एस. के अरूनी हैं तथा उत्तर-पूर्व क्षेत्रिय केन्द्र (एन. ई.आर.सी), गोवहाटी के सह-निदेशक (शोध) श्री उत्तम बथारी हैं।

दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र, बैंगलूर

आई.सी.एच.आर. का दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र आरम्भ से अपने विभिन्न अकदमी व शोध की गतिविधियों में दक्षिण भारत में व्यस्त रहा। 2007-2008 के दौरान निम्नलिखित अकादमिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया–

I. अकादमिक क्रियाकलाप

इतिहास के क्षेत्र में शोध कर रहे विद्वानों तथा इतिहास के विद्यार्थियों को नई सूचना उपलब्ध कराना रहा, केन्द्र इस दौरान निम्नलिखित कई अकादमिक कार्यक्रम आयोजित किया।

(क) विशेष परिचर्चा कार्यक्रम :

केन्द्र ने 28 अप्रैल 2007 को एक विशेष परिचर्चा का आयोजन किया।

डॉ. आर.सी. अग्रवाल, सह महानिदेशक, आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इन्डिया (ए.एस.आई.) भारत सरकार, जनपथ, नई दिल्ली, ने ''अर्ली इकवेसन्स एट् विजयानगर (हैम्पी)'' विषय पर परिचर्चा किया। रेखा चित्रों से युक्त एक घन्टे का लम्बी प्रस्तुती कार्यक्रम उपलब्ध कराया गया जिसमें पूर्व खुदाईयों के ध्येयों व विचारों, उनके महत्त्व पर हाम्पी में चर्चा हुई, कार्यक्रम का संचालन ए.एस.आई. किया। विभिन्न संस्थानों व विश्वविद्यालयों से आये विद्वानों ने कार्यक्रम में भाग लिया

(ब) इक्सबिशॅन-कम-लेक्चर कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के तहत पूर्व खुदाई पुरातात्त्विक स्थान पट्टनम पर दो दिन 16 तथा 17 अगस्त 2007, प्रदर्शनी का आयोजन हुआ जिसका विषय ''पट्टनम–एन इन्डो-रोमन सैट्टलमेन्ट ऑन दि मालाबार कोस्टा, केरला'' था। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री सी.बी. पाटील, डिप्टी सूपरिनटेन्डींग पुरातत्त्ववेता (आर्कियोलॉजिस्ट्), आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इन्डिया, बैगलूर क्षेत्र तथा डॉ. पी.डी. चेरीयन, निदेशक केरल इतिहास अनुसंधान परिषद (के.सी.एच.आर.) थिरूवानन्थपुरम, केरल, मुख्य अतिथि थे।

उद्घाटन कार्यक्रम के बाद दो व्याख्यान हुये :

(*i*) डॉ.पी.जे. चेरीयन, निदेशक, के.सी.एच.आर. थिरूवानन्थपुरम द्वारा ''इन परस्यूट ऑफ मीसीन्ग लिन्क : पट्टनम् अेंक्सकवेशन्स 2007: एन ओवरव्यू'' विषय पर व्याख्यान हुआ, और

(*ii*) डॉ. वी. सेलवाकुमार, तमिल विश्वविद्यालय, तनजावुर, तमिलनाडु द्वारा ''इन्डो रोमन ट्रेड इन साऊथ इन्डिया–रीसेन्ट डिस्कवरीज़'' विषय पर व्याख्यान हुआ।

''पट्टनम् अेंक्सकेवेशन्स'' पर दो दिन की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे लगातार बड़ी संख्या में विद्यार्थियों तथा विद्वानों ने देखा।

(ग) लेक्चर (व्याख्यान) शृंखला कार्यक्रम

दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र के व्याख्यान शृंखला कार्यक्रम के अधीन एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।

31 अगस्त 2007 को 'लेक्चर शृंखला–20' का आयोजन किया गया। डा. गिरिराज कुमार, सचिव, आर्ट सोसायटी ऑफ इन्डिया, आगरा, ने ''रिसेन्ट डवलपमेन्टस इन रॉक आर्ट रीसर्च इन इन्डिया'' विषय पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान की प्रस्तुति में कई 'स्लाईड' की सहायता प्राप्त की गई। डॉ. आर.सी. अग्रवाल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता किया।

अकादमिक क्रियाकलाप

(I) 1857 पर प्रदर्शनी का कार्यक्रम

(क) 1857 के आन्दोलन पर चित्रों की प्रदर्शनी

1857 के आन्दोलन पर चित्रों की प्रदर्शनी जिसका विषय ''रिप्रजेन्टेसन ऑफ 1857 : रीकवरिन्ग दि इन्डियन वॉईस'' था, को 15 और 31 दिसम्बर 2007 को दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र द्वारा बंगलूर में आयोजित किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष प्रोफेसर सब्यासाची भट्टाचार्य द्वारा किया गया। बैंगलोर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर चन्द्रशेखर ने कार्यक्रम का उद्घाटन तथा श्री के.एन. हरी कुमार 'दक्कन हेराल्ड' तथा 'प्रजवानी' के पूर्व सम्पादक मुख्य मेहमान थे। 750 से अधिक विद्वानों/विद्यार्थियों/इतिहासकारों ने प्रदर्शनी में हिस्सा लिया। प्रदर्शनी की सूची को आगंतुकों में बांटा गया।

दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र ने ''कॉन्टेम्पोरेरी पिक्टोरियल इविडेन्सेस ऑफ रेजिसटेन्स अगेन्सट ब्रिटिश रूल इन साऊथ इन्डिया'' जिसका टीपू सुलतान के मैसूर–युद्धों कर्नाटक में 1857 की लडाई और 1857 की प्रदर्शनी के दौरान तमिलनाडु में 1857 पर पुरालेखगार स्रोत्रों संग्रहों को प्रकाशित किया।

(ख) गोवा राज्य म्यूजियम, पानाजी, गोवा के सहयोग से 1857 पर प्रदर्शनी

19 और 29 फरवरी 2008 को गोवा राज्य म्यूजियम, पानीजी, गोवा के सहयोग से ''1857'' पर प्रदर्शनी का अयोजन किया। प्रदर्शनी का उद्घाटन गोवा के मुख्यमंत्री श्री प्रताप दिगम्बर कामथ द्वारा 19 फरवरी 2008 को किया गया। प्रदर्शनी के दौरान निम्नलिखित बातों का आयोजन किया गया :

1. 25 फरवरी 2008 को ''पैनल डिस्र्कशन''
2. 27 फरवरी 2008 को क्विज़ प्रतियोगिता
3. 29 फरवरी 2008 को विशेष व्याख्यान

(ग) कर्नाटक के इतिहासिक स्थानों पर दुर्लभ पुरालेखागार चित्रों/रेखाचित्रों/फोटोचित्रों की प्रदर्शनी

15 से 17 फरवरी 2008 तक तुमकुर विश्वविद्यालय में कर्नाटक हिस्ट्री कांग्रेस के 19वें सत्र का आयोजन किया गया, एस.आर.सी. ने जिन विद्वानों ने सत्र में भाग लिया, उनके लाभ के लिये मध्य इतिहासिक स्थानों के इतिहासिक पुरालेखागार चित्र-दस्तवेजों की प्रदर्शनी का आयोजन किया। प्रदर्शनी का केन्द्र (फोकस) इतिहास के अध्ययन में पुरालेखागार स्रोतों पर था।

(II) विचारगोष्ठी तथा सेमिनार का कार्यक्रम

(क) विचारगोष्ठी का कार्यक्रम

एस.आर.सी. ने 1857 प्रदर्शनी के दौरान, ''रेजिस्टेन्स टू कॉलोनियल रूल इन साऊदर्न इन्डिया, टिल 1857'' विषय पर एक दिन की विचारगोष्ठी का आयोजन किया। 17 दिसम्बर 2007 को इसका उद्घाटन तुमकुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ओ. अन्नथरमैया द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष प्रो. सब्यासाची भट्टाचार्य द्वारा किया गया। निम्नलिखित विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया गया।

1. एन. राजेन्द्रन द्वारा, ''अर्ली रेजिस्टेन्स टू कॉलोनियल रूल इन तमिलनाडु : सर्च फॉर दि आईडिया ऑफ 'नेशन' '' (भाराथीदसन विश्वविद्यालय, तिरुचीरापल्ली)
2. बी. सुरेन्द्रा राव द्वारा, ''एन्टी-ब्रिटिश रेजिस्टेन्स इन साऊथ-केनारा रीज़न'' (मैंगलूर विश्वविद्यालय, बैंगलूर)
3. वैन्कटा राधोथ्म द्वारा, ''दि मद्रास आर्मी, जनरल जैम्स स्मीथ नेल एण्ड दि काऊन्टरइनसरजेन्सी ऑफ 1857: वॉइलेन्स एण्ड अमनेशिया इन मूटनी-हिस्टोरीयोग्राफी'' (पॉन्डीचैरी विश्वविद्यालय)
4. एस. गोपालकृष्णनन द्वारा, ''ऐन्टी-कॉलोनियल रेजिसटेन्स इन अन्ध्रा, 1748 टू 1857'' (श्री वेनकेटेश्वरा विश्वविद्यालय, तिरूपति)
5. के.ए. मणीकुमार द्वारा, ''1806 वैल्लोर रिवोल्ट एन एन्टीसिपेशन ऑफ 1857 रिबेलिअन'' (मनोरमानियम सुनद्रानार विश्वविद्यालय, तिरुनेलवेली)
6. एस. चन्दशेखर द्वारा, ''राईजिंग ऑफ 1857– कर्नाटका'' (बैंगलोर विश्वविद्यालय, बंगलूर)

(ख) अन्तराष्ट्रीय सेमिनार

4 से 7 जनवरी 2008 को एस.आर.सी., बैंगलोर में एक अन्तराष्ट्रीय सेमिनार का ''आईडेन्टेटी, इमोशन एण्ड कल्चर : लंग्वेजेज एण्ड लिटेरेचर ऑफ दि सब-कॉनटिनेन्ट, सी. 900 टू 1971'' विषय पर आयोजन किया गया। विश्वाभारती के कुलपति प्रोफेसर रजतकन्ता रे तथा सेमिनार निदेशक ने नितिनिर्धारक भाषण दिया। सेमिनार का उद्घाटन प्रो. यू.आर. अन्नथमूर्ती (ज्ञानपीठ विजेता) द्वारा तथा प्रो. सुगता बोस, हारवार्ड विश्वविद्यालय (कैम्बरीज़) मुख्य अतिथि थे।

इस विषय पर भारत तथा विदेशों से आये विद्वानों ने अपने पर्चे परस्तुत किया। प्रो. एस. सत्तार (धारवाड): डॉ. चित्रलेखा जुत्शी (विलिमबर्ग): डॉ. जानकी नायर (कोलकत्ता); प्रो. एस. चन्द्रशेखर (बैंगलोर); प्रो. एन. राजेन्द्रन (तिरुचीरापल्ली); प्रो. बी. सुरेन्द्र राव (मैंगलोर), प्रो. विजया रामास्वामी (नई दिल्ली); और प्रो. केशव वेलूथार (मैंगलोर) इस सेमिनार में भागीदार थे।

(III) प्रकाशन

दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र ने श्री निवास रित्ती एवं बी.आर.गोपाल द्वारा सम्पादित इनस्क्रिपशन्स ऑफ दि विजयानगरा रूलर्स, वाल्यूम 2 को प्रकाशन किया। पुस्तक XCIV + 1008 पृष्ठों की है जिसका मूल्य 1500 रु. (प्रत्येक प्रति) है ।

क्षेत्रिय केन्द्र की स्थापना का मुख्य ध्येय दक्षिण भारतीय इतिहास के आरम्भिक स्रोत सामग्री का प्रकाशन है। इस पहलू से एस.आर.सी. द्वारा ''विजयानगरा इनस्क्रिपशन्स वाल्यूम'' (खण्ड 2) का 2008 में प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। इस खण्ड के प्रकाशन का दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र की दशवर्षीय स्थापना दिवस के एक भाग का भी उल्लेख किया गया है। इस के साथ द.क्षे.के. ने कुल 12 पुस्तकों का प्रकाशन तथा एक सीडी रोम ''एपिग्राफिया कारनाटिका'' विषय पर तैयार किया।

(IV) बैठक

17 दिसम्बर 2007 को दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र की 5वीं सलाहकार कमेटी की बैठक बैंगलोर क्षेत्रिय केन्द्र में हुई। कमेटी के सदस्यों प्रो. के. पड्डैय्या, सदस्य आई.सी.एच.आर., पुणे; प्रो. सब्बराउलू, सदस्य आई.सी.एच.आर, पॉन्डीचेरी तथा सहयोजित सदस्यों प्रो. एस. चन्द्रशेखर, बैंगलोर; डॉ. एन. राजेन्द्रन तिरुचीरापल्ली; प्रो. के.ए. मणीकुमार, तिरुनेलवेली; डा. बी सुन्द्राराव, मैंगलोर; प्रो. वेनकट राधाथम, पॉन्डीचेरी की उपस्थिति रही। एस.आर.सी. के अकादमीक क्रियाकलापों पर बैठक के दौरान विभिन्न निर्णय लिया गया। डॉ. एस.के. अरूनी, सहायक निदेशक (शोध) ने एस.आर.सी. की बैठक का समन्वय किया।

(V) पुस्तकों की प्रदर्शनी

दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र ने परिषद के प्रकाशन जैसे, प्रकाशित पुस्तकें, पत्रिकाऐं, रीसर्च फन्डीन्ग पुस्तिका, इपिग्राफिय करनाटिका पर सी.डी. इत्यादि को दक्षिण भारत में विभिन्न अकादमीक वार्षिक सम्मेलनों/सेमिनारों में प्रदर्शित किया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य परिषद के विभिन्न कार्यक्रम जो देश के दक्षिण भाग इतिहास के शोध करने वाले क्षेत्रिय विद्वानों के काम के क्रियाकलापों को व्यापक प्रचार देना हैं। दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र स्वेच्छापूर्वक इन अकादमीक ढाँचों, सम्मेलनों के दौरान पुस्तक की प्रदर्शनीयों का प्रबन्ध अलग स्टाल पर करता है। इन स्थानों पर दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र विद्वानों को उनके शोध कार्यक्रमों अथवा दिशानिर्देश के लिये सलाह देता है।

इस अवधि के दौरान केन्द्र ने परिषद् के प्रकाशनों की, ''प्रदर्शनी-कम-बिक्री'' को निम्नलिखित सम्मेलनों/सेमिनारों में आयोजित किया :

1. 19 से 21 जनवरी 2008 तक श्री कृष्णदेवाराया विश्वविद्यालय अन्नतपुर में साऊथ इन्डियन हिस्ट्री कांग्रेस के 28वें सत्र का आयोजन किया गया ।
2. 15 से 17 फरवरी 2008 तक टुमकुर विश्वविद्यालय में कर्नाटका हिस्ट्री कांग्रेस के 19वें सत्र का आयोजन किया गया ।
3. आई.सी.एच.आर. का राष्ट्रीय सेमिनार, ''1857 इन इन्डियन हिस्ट्री, हिस्टोरियोग्राफी एण्ड मैमोरी''

विषय पर इतिहास विभाग, पॉन्डीचेरी विश्वविद्यालय, पॉन्डीचेरी द्वारा 21 तथा 22 मार्च 2008 को आयोजित किया गया।

कई विद्वानों तथा छात्रों ने हमारे प्रदर्शनी के स्टाल पर सम्पर्क किया। केन्द्र के कर्मचारियों ने परिषद के विभिन्न शोध कार्यक्रमों तथा अनुदान के लिये आवेदन करने के लिए उनका मार्गदर्शन किया। सम्मेलनों के दौरान प्रपत्र के अनुरूप होने वाला आवेदन की प्रतियाँ तथा केन्द्र की लाईब्रेरी-कम-डाक्यूमेन्टेशन यूनिट के संग्रहों को बारे में संक्षिप्त सूचना विद्वानों तथा विद्यार्थियों को दिया गया।

(*a*) प्रकाशन की बिक्री

आई.सी.एच.आर. के प्रकाशनों जैसे एविग्राफिक करनाटीका पर सी.डी., लेक्चर शृंखला, टूवार्ड फ्रीडम, स्रोतों, आई.एच.आर. पत्रिकाओं, आर.एफ.आर. पुस्तिकाओं, के बिक्री से केन्द्र ने इस वर्ष के दौरान 24793/- रु एकत्र किया।

(VI) डीजिटल आरकाईवल कलेक्शन कार्यक्रम

शोधकर्ताओं तथा विद्वानों की सुविधा के लिये दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र ने ब्रिटिश लाईब्रेरी, कोलम्बिया यूनिर्वसिटी लाईब्रेरी, आरकाईब्ज ओरग, इत्यादि से उपलब्ध डिजिटल आरकाईब्ज स्रोतों जो दक्षिण भारतीय इतिहास तथा संस्कृति से जुड़ी हैं, को एकग्रित किया गया। 200 से अधिक दुर्लभ डिजिटल पुस्तकें तथा सैकड़ों कालोनिय समय की सचित्रों चित्रों/रेखाचित्रों तथा पुराने नक्शों को सीडी में संग्रहित किया गया है जो शोधकर्ताओं के मागने पर उपलब्ध हैं।

(VII) परिषद के प्रकाशन की बिक्री

एस.आर.सी. ने आई.सी.एच.आर. की विभिन्न शोध योजनाओं तथा इपिग्राफिया कारनाटिका की सी.डी. विद्वानों के लिये उपलब्ध कराने, लेक्चर शृंखला प्रकाशनों, टूवार्ड फ्रीडम के खण्डों, रीसर्च फन्डीन्ग रूल्स पुस्तिका आदि, देश के दक्षिण क्षेत्र में आयोजित हिस्ट्री कांग्रेस सम्मेलन के दौरान, सेमिनारों, विचार-गोष्ठीयों आदि के प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाया है। एस.आर.सी. ने सम्मेलनों/सेमिनारों का आयोजन किया वहाँ आई.सी.एच.आर. के प्रकाशनों की बिक्री के लिये स्टाल स्थापित कर प्रदर्शित किया जो निम्नलिखित हैं:

1. साऊथ इन्डियन हिस्ट्री के 28वें सत्र का आयोजन कष्णदेवाराया विश्वविद्यालय, अन्नतपुर में 19 से 21 जनवरी 2008 को किया गया।
2. 15 से 17 फरवरी 2008 तक टुमकुर विश्वविद्यालय में कर्नाटक हिस्ट्री कांग्रेस का आयोजन किया गया।
3. आई.सी.एच.आर. का राष्ट्रीय सेमिनार ''1857 इन इन्डियन हिस्ट्री हिस्टोरियोग्राफी एण्ड मैमोरी'' विषय पर इतिहास विभाग, पॉन्डीचेरी विश्वविद्यालय, पॉन्डीचेरी द्वारा 21 तथा 22 मार्च 2008 को आयोजित किया गया।

लाईब्रेरी–कम-डॉक्यूमेन्टेशन यूनिट

दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र अपनी की लाईब्रेरी-कम-डाक्यूमेन्टेशन यूनिट को विकसित करने के लिए शीघ्र प्रकाशित पुस्तकें/प्रकाशनों, अकादमीक पत्रिकाओं, दूर्लभ संग्रहीत तथा व्यक्तिगत लेखों को संग्रहीत करने पर विशेष ध्यान देता है। इस वर्ष के दौरान केन्द्र ने इतिहास तथा उससे जुड़ी हुई 238 नई पुस्तकों का अधिगृहीत किया।

पत्रिकाएँ

केन्द्र द्वारा लगातार क्षेत्रिय, राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय पत्रिकाओं के लाईब्रेरी-कम-डाक्युमेन्टेशन यूनिट के लिये चन्दा दिया गया।

मानार्थ पुस्तकें

केन्द्र ने व्यक्तिगत विद्वानों तथा संस्थाओं से मानार्थ पुस्तकें प्राप्त किया। इस वर्ष के दौरान 448 प्रकाशन जिसमे पत्रिकाऐं व पुस्तकें मार्नाथ प्रति प्राप्त किया। इसका विवरण निम्नलिखित है :

1. 67 पुस्तकें श्रीमति गोवरम्मा, बैंगलोर से दिवंगत श्री नन्जुन्दा सेट्टी के संचयनों से।
2. 61 पुस्तकें/पत्रिकाऐं आई.सी.एच.आर. नई दिल्ली के प्रकाशन विभाग से।
3. 286 पुस्तकें आई.सी.एच.आर. के पुस्तकालय से प्राप्त हुई।
4. आई.सी.एच.आर. की नार्थ-ईस्ट क्षेत्रिय गोवहाटी केन्द्र से 5 पुस्तकें तथा अन्य संस्थानों व विद्वानों से प्राप्त हुई।

प्रकाशित लेखों का संचयन

पुस्तकालय विद्वानों/विद्यार्थियों को महत्त्वपूर्ण प्रकाशित लेखों, संदर्भ सूची जो विशेषकर इतिहास या क्षेत्रिय से पक्ष हैं, प्राप्त करने में सहायता करता है। इस विषय में पुस्तकालय ने कुछ अच्छी ग्रंथसूचीयों को एकत्रित किया जिसमें केरल का इतिहास, तमिल इतिहास, मैसूर इतिहास, हरप्पा आदि की ग्रंथ सूचीयां है। इस प्रकार पुस्तकालय ने प्रकाशित लेखो, जो इन्टरनेट पर उपलब्ध है, को एकत्रित किया, विषयानुसार वर्गीकरण, छपाई तथा विद्यार्थियों के प्रयोग के लिये रखा है।

समचार पत्रों की कतरनों का संचय

लाईब्रेरी-कम-डाक्युरेन्टेशन यूनिट दैनिक समाचारपत्रों (अंग्रेजी, तथा क्षेत्रिय भाषाओं) के साप्ताहिक अनुपूरक में प्रकाशित विभिन्न पहलूओं से जेसे क्षेत्रिय इतिहास, दर्शन-शास्त्र दर्शनिय स्थल, लोकगीत, संस्कारों, पारंपरिक इत्यादी लोकप्रिय लेखों को उपलब्ध कराता है। इन लेखों को संचय कर अलग फाइलों में विद्वानों के लिये रखा जाता है।

विद्वानों द्वारा पुस्तकालय का भ्रमण

बड़ी संख्या में विद्वानों, शोध छात्रों तथा प्रसिद्ध इतिहासकारों को, जिनका शोध इतिहास के क्षेत्र में हैं, पुस्तकालय आकर्षित करता है। इस वर्ष के दौरान कुल 1457 विद्वानों तथा शोधछात्रों ने लाइब्रेरी-कम-डाक्युमेन्टेशन यूनिट से सम्पर्क स्थापित किया। और पुस्तकालय ने विद्वानों के लिए फोटो-कापी कराने की सुविधा को उपलब्ध कराने का प्रयास किया।

उत्तर पूर्व क्षेत्रिय केन्द्र, गोवाहटी

भा.इ.अ.प. उत्तर पूर्व क्षेत्रिय केन्द्र (एन.ई.आर.सी.) गोवहाटी आरम्भ से अपने विभिन्न अकादमिक व शोध की गतिविधियों में व्यस्त रहा। इस केन्द्र द्वारा वर्ष 2007-2008 के दौरान निम्नलिखित अकादमिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया–

अन्तरराष्ट्रीय सेमिनार

15 से 18 मई 2007 को नार्थ-इस्टर्न हिल विश्वविद्यालय (नेहू), शिलांग द्वारा ''आईडेन्टरी, इमोशन एण्ड कल्चर : लैंग्वेजे़ज़ एण्ड लिटरेचर ऑफ दि सब-कॉनटिनेट : सी. 900-सी. 2000'' विषय पर चार दिन का अन्तराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। पूर्व कुलपति, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, प्रो. ए.सी. भगवती, जो मुख्य अतिथि थे, ने सेमिनार का उद्घाटन किया तथा प्रो. रजत कान्त रे, विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलपति व भा.इ.अ.प. के सदस्य द्वारा निति निर्धारक भाषण दिया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता 'नेहू' के कुलपति प्रो. प्रमोद टण्डन द्वारा किया गया। प्रो. डेविड आर. सिएमलिएह ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। सेमिनार में 23 पर्चे प्रस्तुत किए गए और 120 भागीदारों की उपस्थिति रही।

I. अकादमिक क्रियाकलाप

लेक्चर सीरीज

एन.ई.आर.सी. द्वारा निम्नलिखित व्याख्यानों को 'लेक्चर सीरज' कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया :

लेक्चर XXII: कालोनियलिज़म एण्ड चेन्जिंग लैण्डस्कैप्स: मैकींग एण्ड अनमैकीन्ग ऑफ इन्वॉयरमेन्टल रिलेसन्स इन असम।

इसका आयोजन 21 जुलाई 2007 को किया गया, डॉ. राजीब हान्डीकूई, डिब्रूगड विश्वविद्यालय द्वारा व्याख्यान दिया, तथा प्रो. एम. तहेर (अवकाश प्राप्त), भूगोल विभाग, गोवाहटी विश्वविद्यालय, द्वारा अध्यक्षता की गई। कुल 40 लोगों ने व्याख्यान में भाग लिया।

लेक्चर XXIII : प्रोब्लेमाटीक ऑफ स्पेस एण्ड हिस्टोरियोग्राफी ऑन टी प्लान्टेशन इन असम।

4 अक्तूबर 2007 को आयोजित किया गया, श्री मनजीत बरुआ, संकाय सदस्य, वूमेन्स स्टडीज एण्ड डवलेपमेन्ट सेन्टर, दिल्ली विश्विद्यालय, द्वारा व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान की अध्यक्षता दीपाकर बनर्जी, इतिहास विभाग, गोवहाटी विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। कुल 30 लोगों ने व्याख्यान में भाग लिया।

लेक्चर XXIV : होम अवे फ्रॉर्म होम : दि वर्क ऑफ मिशिनरी वाईफ इन दि इवानजेलिकल प्रोजेक्ट इन कालोनियल असम।

31 दिसम्बर 2007, डॉ. सुर्या सिखा पाठक, लेक्चरर, असम विश्वविद्यालय, सिलचर, द्वारा व्याख्यान दिया गया। इसकी अध्यक्षता डॉ. लिज़ा दास, आई.आई.टी., गोवाहटी द्वारा किया गया।

विशेष व्याख्यान

5 मार्च 2008 को 1857 पर प्रदर्शनी के उद्घाटन कार्यक्रम के हिस्से के रूप में विशेष व्याख्यान प्रो. सब्यासाची भट्टाचार्य अध्यक्ष, आई.सी.एच.आर. द्वारा दिया गया जिसका विषय ''महात्मा गांधी एण्ड डिस्कोर्स ऑफ सिविलाईजेशन'' था।

व्याख्यान शृंखला प्रकाशन

2003 में एन.ई.आर.सी. ने एक व्याख्यान शृंखला कार्यक्रम का आरम्भ किया। अप्रैल 2007 तक केन्द्र ने 5 आयोजित व्याख्यानों का प्रकाशन किया। अन्य पाँच व्याख्यानों का प्रकाशन हुआ जिसे प्रो. रान्जू बेजबरुआ, केन्द्र के पूर्व निदेशक, द्वारा लोकार्पण किया गया। निम्नलिखित व्याख्यानों का प्रकाशन किया गया :

1. लेक्चर VII : डॉ. अशन रिद्दी द्वारा ''इनकरसीन एण्ड रेजिस्टेन्स इन अरुणाचल प्रदेश : इन्डियन एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड दि टैगिन्स''।

2. लेक्चर XIII : प्रो. सजल नाग द्वारा ''रैन, रैन कम अगेन : हिस्ट्री ऑफ दि रैनफाल, डिफॉरस्टेशन एण्ड वाटर स्कारसीटी इन चेरापुंजी, दि रैनियस्ट स्पॉट इन ग्लोब''।

लेक्चर XVII : डॉ. मकिको कीमुरा द्वारा ''वी लॉस्ट लैण्ड : कॉलनियल फॉरेस्ट्री, इमिग्रेशन एण्ड लैंड एलिनेशन अमॉन्ग ट्राईब्स इन असम''।

लेक्चर XXIII : मनजीत बरुआ द्वारा ''दि प्रोब्लमाटिक ऑफ स्पेस एण्ड हिस्टोरीयाग्राफी ऑन दि प्लान्टेशन्स इन अपर ब्रह्मपुत्र वैली''।

लेक्चर XXIV : डॉ. सूर्या सिखा पाठक द्वारा ''दि वर्क ऑफ मिशनरी वाईव्स इन दि इवानजेलिकल प्रोजेक्ट इन कॉलोनियल असम : लाईफ एण्ड टाईम्स ऑफ मिसेज पी.एच. मूरे''।

प्रदर्शनी का कार्यक्रम

5 मार्च से 20 मार्च 2008 तक 1857 पर 'दि रिप्रेजेन्टेशन ऑफ 1857 : रिकवरिंग दि इन्डिया वाईस' विषय पर एन.ई.आर.सी. के प्रांगण के चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। गोहावटी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अमरज्योति चौधरी मुख्य अतिथि थे जिन्होंने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। 5 मार्च को पुस्तक लोकर्पण का कार्यक्रम हुआ जिसका विवरण ऊपर दिया गया है। उद्घाटन समारोह में प्रो. अमलेन्दु गुहा, प्रो. विरेन्द्रनाथ दत्ता, श्री ए.सी. बरूआ, प्रो. आर. बेजबरूआ, डॉ. आर.सी. बरूआ तथा प्रो. फॉरूख अहमद ने भाग लिया। आल इन्डिया रेडियो गोवहाटी द्वारा प्रदर्शनी पर 5 मिनट का एक साक्षात्कार (इंटरव्यू) का कार्यक्रम हुआ जो 14 मार्च 2008 को प्रसारित किया गया।

लाइब्रेरी-कम-डॉक्युमेन्टेशन यूनिट

संपन्नता के विचार से एन.ई.आर.सी. के पुस्तकालय में कई नए प्रकाशन प्राप्त किये गए। इतिहास की पुस्तकों के अतिरिक्त उस से संबद्ध अन्य विज्ञानों जैसे मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनैतिक शास्त्र आदि पुस्तकों को खरीदा गया जो विभिन्न ज्ञान-शाखाओं के अंतर्संबद्ध प्रस्ताव के महत्व को बढ़ाने वाली हैं। उत्तर-पूर्व से संबद्ध पुस्तकों को भी खरीदा गया। इस वर्ष के दौरान एन.ई.आर.सी. ने पुस्तकालय के

लिये 671 पुस्तकों को खरीदा है, 37 पुस्तकें तथा 29 पत्रिकाएं विभिन्न स्रोतों से मानार्थ प्राप्त हुए है, तथा 188 पुस्तके परिषद के लाईब्रेरी-कम-डाक्यूमेन्टेशन्स केन्द्र से मानार्थ प्राप्त हुई है।

एन.ई.आर.सी. ने दुलर्भ पुस्तकों का 'स्कानिंग' के द्वारा ''डिजिटाईलिन्ग'' करने की पहल किया गया है। विद्वानों को लिए उसे 'इन्टनेट' पर उपलब्ध कराया गया है जिसे वे अपने कंप्यूटर पर देख सकते है। इस प्रकार एक पुस्तक को कई विद्वान एक साथ देख या प्रयोग कर सकते है तथा साथ ही प्रिंटर से इसकी छपी प्रति भी प्राप्त कर सकते है, जो अनवरत प्रयोग से होने वाली हानि की संभावना की रोकथाम भी करता है। दुर्लभ/अनुउपलब्ध पुस्तकों का पुन:प्रकाशन (उत्पादन) उपलब्ध न होने वाली दुर्लभ पुस्तकों का पुन: प्रकाशन इस वर्ष के दौरान हुआ तथा दुर्लभ पुस्तकों को विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध कराया गया अर्थात् इनका एन.ई.आर.सी के पुस्तकालय के लिये फोटोकॉपी कराया गया।

II. प्रचार तथा प्रसार क्रियाकलाप

(*i*) आई.सी.एच.आर. के प्रकाशनों का प्रदर्शन

1 नवम्बर 2007 से 3 नवम्बर 2007 तक एन.ई.आई.एच.ए. के 28वें सत्र का आयोजन गोलपारा कालेज में हुआ जहाँ आई.सी.एच.आर के सभी प्रकाशनों का एन.ई.आर.सी. ने प्रमुखता से प्रदर्शित किया। न्जूजलेटर, प्रकाशनों की सूची का वितरण किया गया तथा लेक्चर सीरीज के प्रकाशनों को बिक्री के लिये भी उपलब्ध कराया गया। 11 तथा 12 जनवरी 2008 को ''एथनिसिटी एण्ड फोल्कलोर'' विषय पर यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित सेमिनार का आयोजन छायागाँव कालेज, छायागाँव में आयोजित किया गया।

आई.सी.एच.आर. न्यूजलेटर, खण्ड 7, संख्या 1 का भी नार्थ-ईस्ट विश्वविद्यालयों तथा कालेजों के इतिहास के विभागों में बांटा गया।

(*ii*) सेमिनार/सम्मेलन आदि

एन.ई.आर.सी. ने उत्तर-पूर्व के विश्वविद्यालय तथा शोध संस्थानों में आयोजित विभिन्न सेमिनारों/विचार गोष्ठीयों/सम्मेलनों/कार्यशालाओं में सक्रियता से भाग लिया।

III. अन्य क्रियाकलाप

(*i*) क्षेत्रिय सलाहकार समिति (कमेटी) की बैठक

एन.ई.आर.सी. की चौथी क्षेत्रिय सलाहकार/जांच समिति की बैठक 7 मार्च 2008 को गोवहाटी में हुई। आई.सी.एच.आर. के अध्यक्ष प्रो. सब्यासाची भट्टाचार्य द्वारा इसकी अध्यक्षता की गई। उस क्षेत्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों के इतिहास विभागों से 10 सदस्यों ने बैठक में भाग लिया जिससे प्रो. डेविड आर. सिमलेह, सदस्य, आई.सी.एच.आर., डॉ. वाई चिन्ना राव (सदस्य सचिव, आई.सी.एच.आर.) ने भी बैठक में भाग लिया।

(*ii*) भ्रमणकारियों की संख्या

एन.ई.आर.सी. ने इस वर्ष के दौरान लगभग 4000 भ्रमणकारियों का आतिथेय किया जो या तो पुस्तकालय के लिए पूछताछ या आई.सी.एच.आर. द्वारा दी जाने वाली अनुदान आदि की जानकारी के लिए पधारे जिनमें कई ऊचें पदों पर आसीन महानुभाव एवं विशेष रूप से संसद सदस्य श्री बवीसमुतिअरी भी शामिल थे।

(*iii*) डेस्क-टॉप कंप्यूटरों की खरीद

डिजिटाईज पुस्तकालय का सूचीपत्र तथा दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह के लिये डेस्ट-टॉप कंप्यूटरों तथा सरवरो (इन्टरनेट की लाईनें) को खरीदा गया तथा स्थापित कराया गया। यह पाठकों को दुर्लभ पुस्तकों को ''डॉउनलॉड'' करने में सहायक होगा तथा फोटोकॉपी का क्षति होने से बचा जायेगा। केन्द्र को विश्वविद्यालय द्वारा 'इन्टरनेट' की स्थापना की गई जिससे पाठकों को उचित समय पर सूचना-सामग्री उपलब्ध होगी।

खण्ड *XI*

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा

14 से 30 सितम्बर 2007 तक **हिन्दी पखवाड़ा** का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परिषद के कर्मचारियों ने हिन्दी में एक निबन्ध ''शहीद भगतसिंह : योगदान और प्रेरणा'' विषय पर और परिचर्चा प्रतियोगिता में क्या 1857 का विरोध राष्ट्रीय आन्दोलन था? विषय पर भाग लिया।

21 सितम्बर 2007 को निम्नलिखित कर्मचारियों द्वारा परिचर्चा में भागीदारी के लिए पुरस्कार दिया गया :

1. श्री मोहम्मद नाजीम : प्रथम पुरस्कार
2. श्री मोहम्मद अतीक मोहम्मद खान : द्वितीय पुरस्कार
3. श्री धमेन्द्र सिंह : तृतीय पुरस्कार
4. श्री नरदेव शर्मा : सांत्वना पुरस्कार

27 सितम्बर 2007 को निम्नलिखित कर्मचारियों को निम्बन्ध लेखन प्रतियोगिता पर पुरस्कार दिया गया :

1. श्री धमेन्द्रसिंह : प्रथम पुरस्कार
2. श्री मोहम्मद अतीक खान : द्वितीय पुरस्कार
3. श्री संजीव सिंह : तृतीय पुरस्कार
4. श्रीमती मालविका गुलाटी : सांत्वना पुरस्कार
5. श्रीमती वीना अशवनी : सांत्वना पुरस्कार

परिशिष्ट ***I***

परिषद के सदस्यगण
2007-2008

परिषद के सदस्यगण

(31.03.2008)

1. प्रोफेसर सब्यासाची भट्टाचार्य
अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
निवास : T-44, हुडको पैलस
नई दिल्ली 110049

2. प्रोफेसर वाई सुब्बरायालु
कॉआर्डिनेटर
हिस्टोरिकल एटलस ऑफ
साउथ इंडिया प्रोजेक्ट
फ्रेंच इंस्टीट्यूट ऑफ पांडिचेरी
11, सेंट लुईस स्ट्रीट
पाण्डीचेरी – 605001

3. प्रोफेसर के.एन. पानिक्कर
415, प्रशान्त नगर, स्टेज II
मेडिकल कॉलेज पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम – 695011 (केरल)

4. प्रोफेसर शिरीन मूसवी
C/o सेन्टर फॉर एडवान्स स्टडीज इन हिस्ट्री
और डीन, फैकल्टी ऑफ सोशल साईन्सेस
अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़ – 202002 (उत्तर प्रदेश)
फोन : 2701539
shireec.moovi@gmail.com

5. प्रोफेसर जे.पी मिश्रा
सी-5, उत्तरायन पंचमारधी
विश्वविद्यालय रोड
जलबलपुर, मध्य प्रदेश
jpmishra19@rediffmail.com

6. प्रोफेसर सुरज भान
1817, हाउसिंग बोर्ड कालोनी
सेक्टर-1, रोहतक–124001 (हरियाणा)
bhansu@rediffmail.com

7. प्रोफेसर रजत के. रे
आवास : 109, जोधपुर पार्क
कोलकाता–700068 (पश्चिम बंगाल)

8. प्रोफेसर इम्तियाज अहमद
निदेशक, खुदा बख्श ओ.पी. लाइब्रेरी
बांकीपुर, पटना–800004, बिहार
फोन : 612/3292974/2301507
imiazahmad3@rediffmail.com

9. प्रोफेसर बरुण दे
55/2, बालीगंज, सर्कुलर रोड
कोलकाता–700019

10. प्रोफेसर तामो मिबंग
डिपार्टमेन्ट ऑफ ट्राइबल स्टडीज एण्ड
प्रो-वाइस-चांसलर
अरुणाचल विश्वविद्यालय
रोनो हिल्स, इटानगर–791111
अरुणाचल प्रदेश
mail:tman.@rediffmail.com

11. प्रोफेसर डेविड रीड सिएमलिएह
उमसिंग-मावकिनरोह
इतिहास विभाग, एन.ई.एच.यू.
शिलांग–793022, मेघालय
मोबाइल : 9436103103
syiemlieh@hotmail.com

12. प्रोफेसर के. पदुय्या
निदेशक, दक्कन कॉलेज
पोस्ट ग्रेजुएट एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
पुणे–411006 (महाराष्ट्र)
फोन : 020/26692982
k.paddayya@gmail.com

13. डॉ. मरियम डोसाल
इतिहास विभाग
मुम्बई विश्वविद्यालय
विद्यानगरी, कलिना
शांताक्रूज (ईस्ट)
मुंबई–400098 (महाराष्ट्र)
mdossal@gmail.com

14. प्रोफेसर इन्दु बंगा
(इतिहास के प्रोफेसर, अवकाश प्राप्त,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़)
622, फेज 3A (सेक्टर 53)
मोहाली, चंडीगढ़–160059
indu_banga@yahoo.co.in

15. प्रोफेसर अशरफ वानी
पी-3, कश्मीर विश्वविद्यालय
श्रीनगर–190006
जम्मू एण्ड कश्मीर
Ph. 09419015308

16. प्रोफेसर शाहीद अमीन
14, कावालरी लाईन्स, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली–110007 फोन : 27666060
amin.shahid@gmial.com

17. प्रोफेसर डी.एन. झा
9, उत्तरांच्चल, 5, आई.पी. एक्स्टेन्शन
नई दिल्ली–110092
dnj277@hotmail.com

18. प्रोफेसर बासुदेव चटर्जी
48, देशबन्धु अपार्टमेन्ट
आई.पी. एक्सटेन्शन
नई दिल्ली–110092

19. प्रोफेसर अर्जुन देव
G-67, सेक्टर-41,
नोयडा-201303
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली--110002
arjem.leiah@gmail.com

20. महानिदेशक
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग
जनपथ, नई दिल्ली–110001

21. महानिदेशक
नेशनल आर्चिव्स ऑफ इंडिया
जनपथ, नई दिल्ली–110001

22. सचिव
माध्यमिक और उच्च शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001

23. सचिव
संस्कृति विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001

24. वित्तीय सलाहकार
माध्यमिक और उच्च शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001

25. डॉ. एन.के.दास
अधीक्षक, मानवसर्वेक्षण (संस्कृतिक)
भारतीय मानव सर्वेक्षण विभाग संस्कृतिक
मन्त्रालय (संस्कृत मंत्रालय)
C/o भारतीय संग्रहालय
27, जवाहरलाल नेहरू रोड
कोलकाता-700016

26. डॉ. वाई. चिन्नाराव
सदस्य सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
35, फिरोजशाह रोड
नई दिल्ली–110001

परिशिष्ट ***II***

प्रशासनिक समिति और अनुसंधान परियोजना समिति के सदस्य

2007-2008

प्रशासनिक समिति और अनुसंधान परियोजना समिति के सदस्य
(31.03.2008 की स्थिति के अनुसार)

अ. प्रशासनिक समिति सदस्य

1. सब्यासाची भट्टाचार्य
   अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद,
   35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली–110001
2. प्रोफेसर बरुण दे
   55/2, बालीगंज, सर्कुलर रोड
   कोलकाता–700019
3. प्रोफेसर डी.एन. झा
   9, उत्तरांचल 5, आई.पी.एक्टेशन
   नई दिल्ली–110092
4. प्रोफेसर के.एन. पानिक्कर
   (पूर्व कुलपति श्री शंकरा संस्कृत विश्वविद्यालय, कालादी केरला)
   415, प्रशान्त नगर, स्टेज II, मेडिकल कॉलेज पोस्ट
   तिरुवनन्तपुरम – 695011
5. प्रोफेसर इम्तियाज अहमद
   निदेशक, खुदा बख्श ओ.पी. लाइब्रेरी
   बांकीपुर, पटना–800004, बिहार
6. प्रोफेसर तामो मिबंग
   डिपार्टमेन्ट ऑफ ट्राइबल स्टडीज एण्ड प्रो-वाइस-चांसलर,
   अरुणाचल विश्वविद्यालय
   रोनो हिल्स, इटानगर–791111 (अरुणाचल प्रदेश)
7. प्रो. अर्जुन देव
   G-67, सेक्टर 41, नौयडा-201303
   फोन : 0120/2502132
   arjundeiah@gmail.com
8. प्रो. इन्दू बंगा
   622, फेज 3A (सेक्टर 53)
   मोहाली चण्डीगढ 160059
   indu_bangh@yahoo.co.in
9. वित्तीय सलाहकार
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001

10. डॉ. वाई. चिन्ना राव
सदस्य सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली–110001

ख. अनुसंधान परियोजना समिति के सदस्य

1. प्रोफेसर सब्यासाची भट्टाचार्य
अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
2. प्रोफेसर के. पाद्दया
निदेशक, दक्कन कॉलेज
पोस्ट ग्रेजुएट एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
पुणे–411006 फोन : 020-26692982
3. प्रोफेसर शिरीन मूसवी
प्रोफेसर, सेन्टर फॉर एडवान्स स्टडीज इन हिस्ट्री
अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़ – 202002 (उत्तर प्रदेश)
shireeh.moosri@gmail.com
4. प्रो. इन्दू बंगा
622, फेज 3A (सेक्टर 53)
मोहाली चण्डीगढ 160059
indu_bangh@yahoo.co.in
5. प्रोफेसर रजत कान्त रे
कुलपति, विश्वभारती
शान्ति निकेतन बोलपुर (प. बंगाल)
निवास 109, जोधपुर पार्क
कोलकाता–700068
6. प्रोफेसर डेविड रीड़ सिमलेह
उमशींग-मावक्योनरोह
इतिहास विभाग, एनइएचयू
शिलांग-793022, मेघालय
मोबाइल : 9436103103
E-mail: syiemlieh@hotmail.com
7. डॉ. वाई. चिन्नाराव
सदस्य सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली–110001

परिशिष्ट ***II*** (*क*)

अन्य समितियां/ सलाहकार समिति के सदस्य

2007-2008

अन्य समितियां/सलाहकार समिति के सदस्य
2007-2008

(I) जे आर एफ/ एस जी सी समिति के सदस्य

1. प्रोफेसर सब्यासाची भट्टाचार्य
   अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
   35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-110001
2. प्रोफेसर इन्दू बंगा
   622, फेज 3A (सेक्टर 53)
   मोहाली, चंडीगढ़-160059
3. प्रोफेसर जे.पी. मिश्रा
   सी-5, उत्तरायन पंचमर्धी
   विश्वविद्यालय रोड
   जबलपुर, मध्य प्रदेश
   Jpmishra19@rediffmail.com
4. प्रो. डी.एन. झा
   9, उत्तरांचल 5, आई.पी. एक्टेशन
   नई दिल्ली 110092
   dnj277@hotmail.com
5. प्रोफेसर अर्जुन देव
   G-67, सेक्टर 41, नोयड़ा-201303
   फोन-0120-2502132
   arjun.kiah@gmail.com
6. सदस्य सचिव
   भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
   35, फिरोजशाह रोड
   नई दिल्ली-110001

(II) प्रकाशन समिति के सदस्य

1. प्रोफेसर सब्यासाची भट्टाचार्य
   अध्यक्ष
   भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
6. प्रोफेसर बासुदेव चटर्जी — सदस्य
3. प्रोफेसर शाहिद अमीन — सदस्य
5. प्रोफेसर अशरफ वानी — सदस्य
2. प्रोफेसर वाई. सुब्बरायालु — सदस्य
4. प्रोफेसर अर्जुन देव — सदस्य
7. सदस्य-सचिव, भा.इ.अ.प.

(III) सम्पादन मंडल के सदस्य : *दि इण्डियन हिस्टोरिकल रिव्यु* (आई एच आर) और *इतिहास*

1. प्रोफेसर सब्यासाची भट्टाचार्य
   अध्यक्ष,
   भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
2. प्रोफेसर वाई. सुब्बरायालु — सदस्य
3. प्रोफेसर शाहिद अमीन — सदस्य
4. प्रोफेसर अर्जुन देव — सदस्य
5. प्रोफेसर अशरफ वानी — सदस्य
6. प्रोफेसर बासुदेव चटर्जी — सदस्य
7. सदस्य-सचिव, भा.इ.अ.प.

(IV) क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलौर के लिए कार्यावन्यवय समिति (मानीटरिंग समिति)

1. प्रोफेसर सब्यासाची भट्टाचार्य
   अध्यक्ष,
   भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
2. श्री के.एन. पानिक्कर — सदस्य
3. प्रोफेसर के. पाद्दया — सदस्य
4. प्रोफेसर वाई सुब्बारायालु — सदस्य
5. सदस्य-सचिव, भा.इ.अ.प.

(V) क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी के मानीटरन के लिए समिति

1. प्रोफेसर सब्यासाची भट्टाचार्य
   अध्यक्ष,
   भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
2. प्रोफेसर डेविड आर. सिमले — सदस्य
3. प्रोफेसर तामो मिबांग — सदस्य
4. श्री रजत कान्त रे — सदस्य
5. सदस्य-सचिव, भा.इ.अ.प.

(VI) लाईब्रेरी-कम-डॉक्युमेन्टेशन सेन्टर कमेटी के सदस्य

1. प्रो. सब्यासाची भट्टाचार्य
   अध्यक्ष,
   भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
2. प्रो. बरुन डे
3. प्रो. इन्दू बंगा
4. प्रो. डी.एन. झा
5. प्रो. बासुदेव चटर्जी
6. प्रो. शिरीन मूसवी
7. प्रो. सूरज भान
8. सदस्य-सचिव, भा.इ.अ.प.

(VII) सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (सी.एइ.पी.) और एफ.टी.जी. कमेटी के सदस्य

1. प्रो. सब्यासाची भट्टाचार्य
   अध्यक्ष,
   भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
2. प्रो. शहिद अमीन
3. डॉ. मरीयम डोसाल
4. प्रो. अर्जुन देव
5. सदस्य सचिव, भा.इ.अ.प.

परिशिष्ट ***III***

31 मार्च 2008 की स्थिति के अनुसार भा.इ.अ.प. स्टाफ की संख्या

31 मार्च 2008 की स्थिति के अनुसार भा.इ.अ.प. स्टाफ की संख्या दर्शाने वाला विवरण

क्रम सं.	पद का नाम	मंजूर पदों की संख्या	भरे गए पद	रिक्त पद
1.	सदस्य-सचिव	1	1	-
2.	निदेशक (अनुसंधान एवं प्रशासन)	1	1	-
3.	निदेशक (पत्रिका, प्रकाशन और पुस्तकालय)	1	-	1
4.	उप-निदेशक (अनुसंधान)	4	2	2
5.	उप-निदेशक (पत्रिका)	1	-	1
6.	उप-निदेशक (प्रकाशन)	1	-	1
7.	उप-निदेशक (पुस्तकालय)	1	-	1
8.	उप-निदेशक (प्रलेखन)	1	-	1
9.	उप निदेशक (लेखा)	1	1	-
10.	उप-निदेशक (प्रशासन)	1	1	-
11.	सहायक-निदेशक (अनुसंधान)	4	3	1
12.	सहायक-निदेशक (सम्पादक)	2	1	1
13.	सहायक-निदेशक (पुस्तकालय)	1	-	1
14.	सहायक-निदेशक (प्रकाशन)	1	1	-
15.	सहायक-निदेशक (अनुदान)	1	-	1
16.	अनुभाग अधिकारी (प्रशासन)	2	2	-
17.	अनुभाग अधिकारी (लेखा)	1	1	-
18.	निजी सचिव	4	4	-
19.	सम्पादन सहायक	2	-	2
20.	वरिष्ठ पुस्तकालय एवं सूचना सहायक	2	-	2
21.	सहायक	7	3	4
22.	सहायक (रोकड़)	1	1	-
23.	आशुलिपिक (प्रवरण ग्रेड)	1	1	-
24.	वैयक्तिक सहायक	1	1	-
25.	पुस्तकालय एवं सूचना सहायक	2	2	-

क्रम सं.	पद का नाम	मंजूर पदों की संख्या	भरे गए पद	रिक्त पद
26.	केयरटेकर	1	1	–
27.	जिरोक्स आपरेटर	2	2	–
28.	कापी होल्डर	1	1	–
29.	अर्ध-व्यावसायिक सहायक	1	1	–
30.	स्टोरकीपर	1	1	–
31.	लेखा लिपिक	7	6	1
32.	आशुलिपिक	6	5	1
33.	उच्च श्रेणी लिपिक	6	6	–
34.	कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	1	1	–
35.	अवर श्रेणी लिपिक	20	20	–
36.	स्टाफ कार ड्राइवर	3	3	–
37.	गेस्टेटनर आपरेटर	1	1	–
38.	लिफ्ट आपरेटर	1	1	–
39.	स्कूटर ड्राइवर	1	1	–
40.	हिन्दी टंकक	1	1	–
41.	दफ्तरी	1	1	–
42.	कार्यालय परिचर	18	18	–
43.	वाच एण्ड वार्ड अटेन्डेंट	3	3	–
44.	सफाई कर्मचारी	3	3	–
45.	वरिष्ठ पुस्तकालय परिचर	1	1	–
46.	कनिष्ठ पुस्तकालय परिचर	2	2	-
	जोड़	126	105	21

परिशिष्ट IV

वर्ष 2007-2008 के संबंध में भा.इ.अ.प. के वार्षिक लेखे